फरवरी 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

जिसे मोक्ष में जाना है, उस पुरुष को स्त्री जाति पर या स्त्री को पुरुष जाति पर दृष्टि गड़ाकर देखना ही बंद कर देना चाहिए। वर्ना इसका निवेड़ा ही नहीं आएगा।

वर्ष : 15 अंक : 4
अखंड क्रमांक : 172
फरवरी 2020
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

विषय की बिगिनिंग - 'दृष्टि दोष'

संपादकीय

पाँच ही इन्द्रियों के विषय होने के बावजूद भी उनकी पकड़ कितनी अवगाढ़ है कि अनंत काल से उसका अंत ही नहीं आता? क्योंकि फिर प्रत्येक विषय के अनंत पर्याय हैं! जब प्रत्येक पर्याय में से मुक्त हो जाएगा, तभी विषय में से छूटेगा। जिन्हें इसी देह में आत्मा के स्पष्ट वेदन का अनुभव करना हो, उन्हें विशुद्ध ब्रह्मचर्य के बिना इसकी प्राप्ति संभव ही नहीं है। जब तक ऐसी सूक्ष्मातिसूक्ष्म 'रोंग बिलीफ' है कि विषय में सुख है, तब तक विषय के परमाणुओं की पूर्ण रूप से *निर्जरा* (आत्मप्रदेश में से कर्मों का अलग होना) नहीं हो सकती। जब तक यह 'रोंग बिलीफ' संपूर्ण-सर्वांग रूप से खत्म नहीं हो जाती, तब तक अति अति सूक्ष्म जागृति रखनी चाहिए।

ब्रह्मचर्य की सेफसाइड के लिए आंतरिक और बाह्य एविडेन्स को सफाई से हटा देने की क्षमता प्रज्वलित करना अति आवश्यक है। आंतरिक विषयों को खत्म करने के लिए सही समझ, ज्ञान का पुरुषार्थ, साथ में 'श्री विज्ञन की' जागृति और अंत में विज्ञान जागृति अनिवार्य है। बाह्य संयोगों में दृष्टि दोष, स्पर्श दोष और संग दोष से विमुख रहने की व्यवहार जागृति उत्पन्न होना भी आवश्यक है। वर्ना ज़रा सी ही अजागृति विषय के कौन से और कितने गहरे गड्ढे में डाल दे, वह कोई नहीं कह सकता।

अब, विषय की बिगिनिंग क्या है? मोह भाव से स्त्री को देखना। मूर्छित भाव से देखना। यदि किसी के प्रति अपनी दृष्टि खिंच जाए, तो कितना बड़ा बीज डाला होगा कि अपनी दृष्टि खिंची चली जाती है! पिछले जन्म में दृष्टि चिपक गई थी, इसलिए इस जन्म में बार-बार दृष्टि पड़ जाती है। क्योंकि अंदर विषय की रुचि पड़ी हुई है। यदि दृष्टि में मिठास बर्ते तो वह भी बहुत बड़ा जोखिम है। प्रस्तुत अंक में दृष्टि दोष किसे कहते हैं, दृष्टि पड़ना, दृष्टि गड़ाना, दृष्टि खिंच जाना, दृष्टि बिगड़ना, दृष्टि दोष के परिणाम व जोखिम, दृष्टि दोष में से निकलने के उपाय वगैरह बातें यहाँ संकलित हुई हैं।

विकारी दृष्टि क्यों होनी चाहिए? संसार में सब से बड़ा रोग यही है। आँख से संसार खड़ा हो जाता है। विषय की जड़ पर संसार खड़ा है, विषय ही जड़ है। यह जगत् तो पूरा भय का ही कारखाना है। उस पर भी कलियुग में तो भयंकर असर डालता है। विषयों में दृष्टि बिगड़ना तो ऑटोमैटिक कैमरा है लेकिन उसमें कोई मिश्रचेतन की फिल्म मत उतरने देना। सिर्फ शुद्धात्मा की ही फोटो खींचना। महात्माओं की दृष्टि तो, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसी जागृति आते ही निर्मल हो जाती है। अब, विषय की जड़ को पकड़कर, दृष्टि दोष की एक भी भूल नहीं होने देनी है, ऐसा निश्चय होना चाहिए। उसके सामने जागृति रखकर, दोषों के प्रतिक्रमण करके दृष्टि निर्मल होने का और आचरण में लाने का पुरुषार्थ करें, वही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

विषय की बिगिनिंग - 'दृष्टि दोष'

मूल दृष्टि रोग में छुपा है दृष्टि दोष

विषय की शुरुआत क्या है? मोह भाव से स्त्री को देखना, मूर्छित भाव से देखना, वह। पर क्या प्रत्येक स्त्री को मूर्छित भाव से देखा जाता है? एक को देखकर विचार आते हैं, मगर दूसरी को देखें, तो विचार नहीं आते, मतलब देअर इज़ समथिंग रोंग (कहीं कुछ गलत है)। यदि स्त्री को देखते ही ज़हर चढ़ जाता तो प्रत्येक स्त्री को देखते ही ज़हर चढ़ जाना चाहिए। यदि स्त्री ही रूट कॉज़ (मूल कारण) होती, तो सभी स्त्रियाँ को देखते ही ज़हर चढ़ना चाहिए। मगर ऐसा नहीं है। वह तो कुछ ही परमाणुओं से परमाणु का आकर्षण होता है।

जानवरों को जिन विषयों की इच्छा ही नहीं है, मनुष्य निरंतर उसकी इच्छा करते हैं। विषय ही यदि विषय होते, तो मान लो एक जगह पर दो स्त्रियाँ बैठी हैं, एक माँ है और एक पत्नी है, तो वहाँ माँ पर विषय भाव नहीं होता? क्योंकि विषय, विषय है ही नहीं। भ्रांति ही विषय है। इन विषयों को अगर बंद करना चाहो, तो उसका उपाय बतलाऊँ। ये विषय एक ऑटोमेटिक कैमरा है, उसमें फिल्म मत उतरने देना। 'शुद्धात्मा' की ही फोटो उतार लेना। बाकी विषय कोई चीज़ ही नहीं है। इसमें तो अच्छे-अच्छे ब्रह्मचारियों का भी दिमाग़ चकरा जाता है कि यह है क्या? जो जिसमें ओतप्रोत रहे, वही विषय। मतलब, आगे से भी अंधा और पीछे से भी अंधा, और कुछ दिखाई ही नहीं देता, वह मोहांध कहलाता है।

दृष्टि बिगड़ते ही खत्म

आजकल तो सब ओपन बाज़ार ही हो गया है न? इसलिए, यों तो लगता है कि शाम होने तक एक भी सौदा नहीं किया, लेकिन यों ही बारह सौदे लिख दिए होते हैं। केवल देखने से ही सौदे हो जाते हैं! अन्य सौदे तो जो होने होंगे वे होंगे, लेकिन यह तो मात्र देखने से ही सौदे हो जाते हैं! हमारा ज्ञान मिलने के बाद ऐसा नहीं होता। स्त्री जा रही हो तो उसके अंदर आपको शुद्धात्मा दिखाई देंगे, लेकिन अन्य लोगों को शुद्धात्मा कैसे दिखाई देंगे? क्या देखने से सौदा हो जाता है तुझसे अब? नहीं होता न? और ज्ञान लेने से पहले तो कितने हो जाते थे शाम तक?

प्रश्नकर्ता : दस-पंद्रह हो जाते थे।

दादाश्री : और किसी की शादी में जाए तब? किसी की शादी में गए हों, उस दिन तो आप बहुत कुछ देखते हो न? सौ एक सौदे हो जाते हैं न? यानी ऐसा है यह सब! वह तेरा दोष नहीं है! मनुष्यमात्र से ऐसा हो ही जाता है। क्योंकि यदि कुछ आकर्षण वाला देखे तो दृष्टि खिंच ही जाती है। उसमें स्त्रियों को भी ऐसा है और पुरुषों को भी ऐसा, आकर्षण वाला देखा

कि सौदा हो ही जाता है! परेशानी केवल, जब स्त्री-पुरुष दोनों आमने-सामने मिलते हैं तब वहाँ मूलत: दृष्टि का रोग है। जैसे मार्केट में आकर्षक सब्ज़ी हो तो हम शाम को लेकर ही आते हैं न? नहीं लेनी हो फिर भी ले आते हैं न? कहेंगे, 'बहुत अच्छी सब्ज़ी थी, इसलिए ले आया!' आकर्षक आम दिखाई दें तो ले नहीं आते लोग? अच्छे, सुंदर दिख रहे हों तो? सुंदर दिख रहे हों तो सौदा कर लेते हैं न? फिर काटकर खाने पर मुँह खट्टा हो जाए तो कहेंगे, 'पैसे पानी में गए!' ऐसा है यह जगत्! यह तो सब आँख का चमकारा हैं! आँखें देखती हैं और चित्त चिपक जाता है। इसमें आँख का क्या गुनाह? गुनाह किस का है?

प्रश्नकर्ता : मन का?

दादाश्री : मन का भी क्या गुनाह? गुनाह अपना है कि हम कमज़ोर पड़ गए, तभी मन चढ़ बैठा न! गुनाह अपना ही। पहले तो ऐसा भी सोचते थे कि यहाँ हमें नहीं देखना चाहिए, यह तो बहन है। यह तो मामा की बेटी है, फलाँ है। अभी तो देखने में कुछ बाकी ही नहीं रखते न? यह तो सब पाशवता कहलाएगी। थोड़ा-बहुत विवेक जैसा भी कुछ नहीं होना चाहिए?

पहले तो लोगों की दृष्टि एकाध जगह पर ही बिगड़ती थी। आज तो जगह-जगह दृष्टि बिगड़ती है! इसलिए फिर हिसाब चुकाने जाना ही पड़ेगा। यानी वह जहाँ जाए, हल्की जाति में जाए तो उसे भी हल्की जाति में जाना पड़ेगा। और कोई चारा ही नहीं। हिसाब चुकाना ही पड़ेगा। अब इन बेचारों को इसका पता ही नहीं है न कि इसकी ज़िम्मेदारी क्या है? आप समझते हो कि ये लोग ऐसा कर रहे हैं? तो आप भी वैसा ही करते हो, बिच्छू यदि डंक मारे तो तुरंत ही क्यों दूर हो जाते हो? इसमें कोई ऐसा दिखाने वाला नहीं है न कि डंक मारेगा?

बड़े पुरुषों को नीची जाति में क्यों जन्म लेना पड़ता है? विषय-विकार के रोग जिन्हें लगे हैं, वे सभी नीची जाति में जन्म पाते हैं, इसी एक आधार पर। जिन में विषय-विकार कम होते हैं, वे उच्च जाति में, उच्च कुल में और उच्च गौत्र में होते हैं, विषय दोष कम हैं, इसलिए! केवल दृष्टि में फर्क होने से, वह जहाँ जाए, वहाँ जाना पड़ता है। इसलिए सावधान रहना है। खुद की स्त्री के अलावा और कहीं दृष्टि बिगड़नी ही नहीं चाहिए। और कहीं दृष्टि बिगड़ी तो समझो खत्म हो गया। मैं क्या कहता हूँ कि अन्य किसी स्त्री को मत देखना, कुदरती तेरे हिस्से में जो आई है, उसे तू भोग। यदि किसी अन्य की स्त्री पर नज़र बिगाड़े तो वह चोरी करने के बराबर है। अपनी स्त्री पर कोई नज़र बिगाड़े तो अच्छा लगेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : जिसने शादी की है, उसके लिए तो हमने एक ही नियम दिया है कि तुझे अन्य किसी स्त्री के प्रति दृष्टि नहीं बिगाड़नी है। और शायद कभी ऐसी दृष्टि हो जाए तो प्रतिक्रमण विधि करना और निश्चय करना कि, 'ऐसा फिर से नहीं करूँगा।' जो खुद की स्त्री के अलावा अन्य स्त्री की ओर नहीं देखता, अन्य स्त्री पर जिसकी दृष्टि नहीं रहती, दृष्टि जाए फिर भी उसके मन में विकारी भाव नहीं होते, विकारी भाव हो जाएँ तो वह खुद बहुत पछतावा करता है, तो इस काल में एक पत्नी होने के बावजूद भी उसे ऐसा कहा जाएगा कि ब्रह्मचर्य में है। उसी प्रकार आपको भी नियम से रहना चाहिए। भले ही कैसी

भी खूबसूरत हो फिर भी, किसी लड़की की ओर नज़र नहीं जाए, इतना सँभालने को कहा है।

दृष्टि बिगड़े तो वह है भयंकर पाप

परायी स्त्री या परायी लड़की पर तनिक भी दृष्टि बिगड़े तो वह भयंकर पाप है। तेरी खुद की स्त्री हो तो हर्ज नहीं है। लेकिन परायी के पीछे पड़ा तो यहाँ पर तो हरहाया रहा, लेकिन वहाँ भी (दूसरे जन्म में) दुम के साथ हरहाया होकर उछल-कूद मचाएगा। यह मनुष्य जन्म चला जाएगा। महामुश्किल से मिला यह मनुष्यपन चला जाएगा। इसलिए सावधान हो जा ज़रा।

मुझे सब से ज़्यादा चिढ़ इस बात की रहती है कि किसी पर भी दृष्टि कैसे बिगाड़ सकता है तू? तेरी बहन पर कोई खराब दृष्टि डाले तो तुझे कैसा लगेगा? उसी तरह अगर तू किसी की बहन पर दृष्टि बिगाड़ेगा तो? लेकिन इन लोगों को ऐसा विचार नहीं आता होगा न?

प्रश्नकर्ता : ऐसा विचार आए तो कोई ऐसा करेगा ही नहीं न?

दादाश्री : हाँ, कोई करेगा ही नहीं। लेकिन इतनी मूर्च्छा है न!

किसी की बेटी जा रही हो और उस पर दृष्टि बिगड़े, तो उस घड़ी तुरंत ही विचार नहीं आना चाहिए कि मेरी बेटी पर कोई दृष्टि बिगाड़े तो मुझे कितना बुरा लगेगा? ऐसा विचार नहीं आना चाहिए? ऐसा विचार आए तभी वह मनुष्य है। और जो दूसरों पर दृष्टि बिगाड़े, उसे मनुष्य कहेंगे ही कैसे? ये सारी *अणहक्क* (बिना हक़) की जो चीज़ें हैं, उन पर दृष्टि नहीं बिगाड़नी चाहिए न?

दृष्टि मत बिगाड़ना। बाहर देखने में बहुत जोखिमदारी है। वह हरहाया पशु कहलाता है।

तुलसीदास जी को पूरा शास्त्र लिखने का अवसर तो नहीं मिला लेकिन दो ही पंक्तियाँ बोले,

'परधन पत्थर मानिए, पर-स्त्री मात समान,
इतने से हरि ना मिले, तो तुलसी जमान।'

कृपालुदेव तो ज़मानती बने और ये दूसरे ज़मानती। हक़ का खाएगा तो मनुष्य में आएगा, *अणहक्क* का खाएगा तो जानवर में जाएगा।

पिछले परिणाम की वजह से उत्पन्न होता है मोह

प्रश्नकर्ता : यानी इस विषय की तरफ कपड़ों की वजह से मोह उत्पन्न होता है न? यों ऐसे दृष्टि पड़े, वह सब से पहले कपड़ों पर पड़ती है, तो तभी से मोह उत्पन्न होता है न?

दादाश्री : मूलत: तो खुद विषयी है, इसलिए कपड़े ज़्यादा मोहित करते हैं। खुद विषयी नहीं हो तो कपड़े मोहित नहीं कर पाएँगे। यहाँ अच्छे-अच्छे कपड़े बिछा दें तो क्या मोह उत्पन्न होगा? यानी खुद को विषय का मज़ा और आनंद है, उसकी इच्छा है, इसलिए वैसा मोह उत्पन्न होता है।

जो लोग विषय की इच्छा से रहित हों, उन्हें कैसे मोह उत्पन्न होगा? यह मोह कौन उत्पन्न करता है? पिछले परिणाम मोह उत्पन्न करते हैं। तो उन्हें आप धो देना। बाकी, कपड़े बेचारे क्या करें? पहले का बीज डाला हुआ है, यह उसी का परिणाम आया है। लेकिन उन सभी पर मोह नहीं होता। जहाँ हिसाब हो वहीं मोह होता है। अन्यत्र मोह के नए बीज पड़ते ज़रूर है, लेकिन मोह नहीं होता। यह तो कपड़ों की वजह से मोह उत्पन्न होता है, नहीं तो अगर कपड़े

निकाल दिए जाएँ तो काफी कुछ मोह कम हो जाएगा। सिर्फ अपनी ऊँची जाति में ही मोह कम हो जाएगा। यह तो बेचारे को कपड़ों की वजह से भ्रांति रहती है और कपड़ों के बिना देखेगा तो यों ही वैराग आ जाएगा। तभी तो दिगंबरियों की ऐसी खोज है न!

जहाँ दृष्टि चिपकी वहाँ मिलेगी पत्नी

एक भाई को वैराग्य नहीं आ रहा था। इसलिए मैंने उसे 'थ्री विज़न' दिया। फिर 'थ्री विज़न' से उसने देखा, तो उसे बहुत वैराग्य आ गया।

तुझे ऐसे देखना पड़ता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा उपयोग रखना पड़ता है।

दादाश्री : ऐसा? यानी अभी तक मोह है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अभी भी ऐसे कभी मोह सवार हो जाता है। मान लो बीवी अच्छे कपड़े पहनकर ऐसे चले तो फिर अंदर मूर्छा हो जाती है।

दादाश्री : ऐसा? तो फिर जब जापानीज़ पुतले को अच्छे कपड़े पहनाते हैं तब वहाँ क्यों मोह नहीं होता? स्त्री की मृतदेह हो और उसे अच्छे कपड़े पहनाए जाएँ तो मोह होगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं होगा।

दादाश्री : क्यों नहीं होगा? तो इन सभी को किस पर मोह होता है? स्त्री है, कपड़े अच्छे पहने हैं, लेकिन मुर्दा हो और अंदर आत्मा नहीं हो तो, उस पर मोह होगा? तो मोह किस पर होता है? यह नहीं सोचा न? जिस में आत्मा नहीं हो, ऐसी स्त्री पर मोह करता है कोई?

प्रश्नकर्ता : नहीं करता।

दादाश्री : तो इसका क्या कारण है? तो वह क्या आत्मा से मोह करता है? तेरी जो बीवी है न, उस पर पिछले जन्म की तेरी दृष्टि चिपक गई थी, उसका यह फल आया है।

प्रश्नकर्ता : मेरा विचार ब्रह्मचर्य लेने का है और उसका ऐसा विचार नहीं है, इसलिए वह ऐसी बिगड़ी है न!

दादाश्री : वही परवशता है न! कितनी अधिक परवशता!

प्रश्नकर्ता : और उसे तो बल्कि आश्चर्य होता है कि 'आपको मेरे प्रति आकर्षण क्यों नहीं होता?'

दादाश्री : उससे ऐसा कहना कि, 'तू जब संडास में जाती है, फिर भी बाहर रहकर मुझे दिखाई देता है, इसलिए आकर्षण नहीं होता।'

प्रश्नकर्ता : तब तो वह भड़क जाएगी।

दादाश्री : नहीं, लेकिन उसे समझ में आ जाएगा कि संडास में जाए, ऐसा दिखाई दे तो आकर्षण होगा ही कैसे? वह कैसा खराब दिखेगा? लेकिन यह भी बम फटने जैसा ही हो जाता है न? तब तो यों भी फँसाव हो गया न?

दृष्टि मिलाना, वह है जोखिम

प्रश्नकर्ता : वह यदि मोह का जाल डाले तो उससे कैसे बचें?

दादाश्री : तुम्हें नज़र ही नहीं मिलानी है। तुम्हें पता है कि यह जाल खींच लेगा, तो उससे नज़र ही नहीं मिलानी है।

प्रश्नकर्ता : लेडीज़ के साथ नज़र से नज़र नहीं मिलानी चाहिए?

दादाश्री : हाँ, नज़र से नज़र नहीं मिलानी चाहिए। मोही प्रकृति वालों की आँखें भी विकारी होती हैं। पुरुष जब लड़कियों को देखते हैं तो देखते ही ज्ञान चला जाता है और लड़कियाँ जब पुरुषों को देखती हैं तो देखते ही ज्ञान चला जाता है। इसलिए ऐसे माल को देखना ही नहीं है। जिसका प्रभाव पड़े, अपने भाव बदलें, विचार बदलें, ऐसे माल को देखना। यह तो सारा कचरा माल है, 'रबिश', बिकाऊ माल! जहाँ तुम्हें लगे कि यहाँ तो फँसाव ही है, तो वहाँ पर तो उससे मिलना ही नहीं चाहिए। तुम्हें तुरंत ऐसा पता चल जाएगा न कि यह बुरी है?

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में जो अपने जान-पहचान वाले होते हैं, वे आकर हम से बात करें तो उसका हमें समभाव से निकाल करना चाहिए, लेकिन यदि उसमें उसकी दृष्टि खराब हो तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तो तुम्हें सारा काम नीची नज़र रखकर करना चाहिए। उसके सामने ऐसा कर देना चाहिए कि कम उम्र के हैं, इसमें और कुछ समझते ही नहीं हैं, और उसे ऐसा ही लगना चाहिए कि यह कुछ समझता ही नहीं है, तो फिर वह चली जाएगी। तुझे यदि कोई ऐसी मिल जाए, तो क्या वह ऐसा समझेगी कि यह सब समझ गया है? क्या तू ऐसा बताने जाता है? वह सब बेवकूफी कहलाएगी।

आकर्षण में बह मत जाना, जहाँ आँखें आकृष्ट हों, वहाँ से दूर ही रहना। जहाँ सीधी आखें हों, ऐसी सब जगह व्यवहार करना लेकिन जहाँ आँखें आकर्षित होने लगें, वहाँ पर जोखिम है, लाल बत्ती है। किसी के भी साथ नज़रें मिलाकर बात मत करना, नज़रें नीची रखकर ही बात करनी चाहिए। दृष्टि से ही बिगड़ता है। उस दृष्टि में विष होता है और फिर विष चढ़ जाता है। अतः यदि दृष्टि गड़ जाए और नज़र खिंच जाए तो तुरंत प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। इसमें तो सावधान ही रहना चाहिए। जिसे यह जीवन बिगड़ने नहीं देना है, उसे बिवेयर रहना चाहिए। जान-बूझकर कोई कुएँ में गिरता है क्या?!

दृष्टि बिगड़ने के बाद आगे बढ़ता है

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में एक-दूसरों को मान देना, वह तो कुछ बुरा नहीं कहलाता न?

दादाश्री : मान देना, लेकिन दृष्टि नीची रखकर। दृष्टि बिगड़ते ही तुरंत पता चल जाता है। मान में तो तुरंत दृष्टि बिगड़ती है। इतना ही जोखिम है, अन्य कोई जोखिम नहीं है।

आपको यह सब काम आएगा क्या?

कुछ लोगों को कैसा होता है कि मान की गांठ विषय की ही रक्षा करती है। अतः उसका विषय खत्म होते ही मान की गांठ छूट जाएगी। कुछ लोगों में पहले मान की गांठ होती है, और बाद में विषय होता है, यानी कि मान की गांठ के आधार पर विषय होता है और कुछ लोगों में विषय के आधर पर मान की गांठ होती है! अतः एक का आधार निराधार हुआ कि दूसरा गायब हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : किसी स्त्री को हम बहन मानें, बेटी मानें या माता मानें, तो फिर उसके लिए हमें बुरा भाव नहीं होगा न?

दादाश्री : मानने से कोई फल नहीं मिलता, माना हुआ रहता ही नहीं न! लोग तो सगी बहन के साथ भी 'व्यवहार' करते हैं! ऐसे कई उदाहरण

मैं जानता हूँ। अत: माना हुआ कुछ भी रह नहीं पाता।

प्रश्नकर्ता : तो क्या उसका अर्थ यह है कि हर बात में सावधान रहना चाहिए?

दादाश्री : बहुत ही सावधान रहना चाहिए और यह तो दादा की आज्ञा है न! इसलिए यह आज्ञा तो, खास तौर पर सभी को दी हुई ही है! जिसे जीतना है, उसे हमारी इस सब से बड़ी आज्ञा का पालन करना है। बाकी, माना हुआ कुछ भी रहता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा भाव से देखें, तो फिर परेशानी ही नहीं होगी न?

दादाश्री : शुद्धात्मा भाव से तो देख ही लेना है। लेकिन दृष्टि तो गड़ानी ही नहीं चाहिए। आपको कोई नमस्कार करे और दो मीठे शब्द बोले तो आपकी दृष्टि तुरंत ही उस पर मिठास वाली हो जाएगी और फिर उसकी दृष्टि आपके लिए बिगड़ेगी। अत: कोई मान देना शुरू करे, तभी से उसे दुश्मन मान लेना। व्यवहार में साधारण मान दे तब तो कोई हर्ज नहीं है, लेकिन यदि दूसरे प्रकार का मान दे, तभी से हमें समझ जाना चाहिए कि ये अपने दुश्मन हैं, हमें खड्डे में ले जाएँगे!

सब से बड़ा जोखिम यही है, दूसरा कोई जोखिम है ही नहीं। बाकी, माना हुआ कुछ रहता नहीं। ऐसा आप कहाँ से लाए? माना हुआ।

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो प्रश्न उठा कि किसी को भाई-बहन की दृष्टि से देखें तो कैसा है?

दादाश्री : नहीं, उस दृष्टि से देखना ही नहीं चाहिए न! वह दृष्टि तो अब रही ही नहीं न! यानी उस दृष्टि से देखने में 'सेफसाइड' नहीं रही। आपको क्या पता कि यह प्रजा कैसी है? सगे चाचा की बेटी पर भी दृष्टि बिगड़ जाती है! यह तो, घर-घर में माल ही सारा ऐसा हो गया है! कलियुग तो सर्वत्र फैल चुका है।

स्त्री की तरफ तो सब से पहले दृष्टि बिगड़ती है। दृष्टि बिगड़ने के बाद आगे बढ़ता है। जिसकी दृष्टि नहीं बिगड़ती उसे कुछ भी नहीं होता। अब अगर तुझे सेफसाइड करनी हो तो दृष्टि मत बिगड़ने देना और दृष्टि बिगड़ जाए तो प्रतिक्रमण करना।

भगवान ने कहा है, 'आँखों में मत देखना'

प्रश्नकर्ता : इस विषय-विकारी दृष्टि के परिणाम क्या हैं?

दादाश्री : अधोगति। यह तो पूरे दिन 'चाय' याद आती है। 'चाय' देखते ही दृष्टि बिगड़े तो फिर वह चाय पीए बिना रहेगा क्या? दृष्टि नहीं बिगड़ना सब से बड़ा गुण कहलाता है।

भगवान ने कहा है कि दुनिया में सभी चीज़ें खाना, लेकिन मनुष्य जाति की आँखों में मत देखना और उसके चेहरे को एकटक मत देखना। अगर देखो तो सामान्य भाव से देखना, विषय भाव से मत देखना। यदि आमों को देखकर पास में रखोगे तो पड़े रहेंगे। वह एक तरफा है, लेकिन यह जीता-जागता जीव तो चिपक जाएगा, उसके बाद एक तरफ रख दोगे तो दावा करेगी। शादी के समारोह में जब स्वागत द्वार पर खड़े रहते हो तो क्या हर एक आने वाले को एकटक देखते हो? नहीं। वहाँ तो एक आता है और एक जाता है, यों सामान्य भाव से देखते हो। उसी तरह से देखना है। मैंने ज्ञान होने से पहले

ही तय किया हुआ था कि सामान्य भाव से देखना है।

ये सभी लोग नहीं होते तो अच्छा होता न? अपने भाव ही नहीं बिगड़ते न?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो अपने अंदर भाव ही ऐसे हैं, इसीलिए सामने ऐसे निमित्त मिले हैं न? अत: हमें अपने भाव ही तोड़ देने चाहिए, तो फिर निमित्त गले नहीं पड़ेगा न!

दादाश्री : सच कहा है। इसीलिए हम कहते हैं कि भावनिद्रा टालो। ये ऐसे लोग हैं कि सभी तरह के भाव आएँ। उसमें भावनिद्रा नहीं आनी चाहिए, देहनिद्रा आएगी तो चलेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन भावनिद्रा ही आती है न?

दादाश्री : ऐसा कैसे चलेगा? यदि ट्रेन सामने से आ रही हो तो भावनिद्रा नहीं रखते। ट्रेन से तो एक ही जन्म की मृत्यु है, लेकिन यह तो अनंत जन्मों का जोखिम है। जहाँ चित्र-विचित्र भाव उत्पन्न हों, ऐसा यह जगत् है। उसमें तुझे खुद ही समझ लेना है। भावनिद्रा आती है या नहीं? भावनिद्रा आएगी तो संसार तुझे बाँध लेगा। अब अगर भावनिद्रा आ जाए तो वहीं, उसी दुकान के शुद्धात्मा से ब्रह्मचर्य के लिए शक्तियाँ माँगना कि, 'हे शुद्धात्मा भगवान, मुझे पूरी दुनिया के साथ ब्रह्मचर्य पालन करने की शक्तियाँ दीजिए।' यदि हमसे शक्तियाँ माँगोगे तो उत्तम ही है, लेकिन वह तो डायरेक्ट, जिस दुकान से व्यवहार हुआ है, वहीं से माँग लेना सब से अच्छा।

सुंदर फूल हों तो वहाँ देखने का मन होता है न? वैसे ही इन सुंदर लोगों को देखने का मन हो जाता है और वहीं पर थप्पड़ पड़ जाता है। इन फूलों को सूंघना, खाना-पीना, लेकिन 'इस' एक ही जगह पर देखने की ज़रूरत नहीं है, कहीं भी नज़र मत मिलाना।

प्रश्नकर्ता : नहीं देखना हो फिर भी यदि सुंदर स्त्री दिख जाए, तब वहाँ क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उस समय नज़रें मत मिलाना।

प्रश्नकर्ता : नज़रें मिल जाएँ तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अपने पास प्रतिक्रमण का साधन है, उससे धो देना। नज़रें मिल जाएँ, तब तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। इसीलिए तो कहा है न कि मनोहर स्त्री के फोटो या मूर्ति मत रखना।

स्त्री-पुरुष के दृष्टि रोग का इलाज क्या?

इस जगत् में स्त्री को पुरुष का और पुरुष को स्त्री का आकर्षण कुछ उम्र तक रहता ही है। देखने से ही कॉज़ेज़ उत्पन्न हो जाते हैं। लोग कहते हैं, 'देखने से क्या होता है?' अरे! देखने से तो निरे कॉज़ेज़ ही उत्पन्न होते हैं। लेकिन यदि (सम्यक्) 'दृष्टि' दी हुई हो तो देखने से कॉज़ेज़ उत्पन्न नहीं होंगे। पूरा जगत् व्यू पोइन्ट से देखता है। जबकि सिर्फ ज्ञानी ही 'फुल' (पूर्ण) दृष्टि से देखते हैं।

दृष्टि बदलने के बाद ही रमणता शुरू होती है। दृष्टि बदलने का भी कारण है। उसके पीछे पिछले जन्म के कॉज़ेज़ हैं। इसलिए हर किसी को देखकर दृष्टि नहीं बदलती। कुछ खास लोगों को देखने पर ही दृष्टि बदलती है। कॉज़ेज़ हों, उसका पहले का हिसाब चल रहा हो और बाद में रमणता हो जाए तो समझना कि बहुत बड़ा हिसाब है। अत: वहाँ पर अधिक जागृति रखना।

लोग क्या कहते हैं कि, 'मुझे स्त्री के लिए बुरे विचार आते हैं।' अरे! तू जब देखता है, तभी फिल्म तैयार हो जाती है। वह फिर रूपक में आती है, तब फिर उसके लिए शोर मचाता है कि ऐसा क्यों हो रहा है? यह फिल्म कॉज़ेज़ हैं और रूपक इफेक्ट है। हमारे अंदर कॉज़ेज़ ही नहीं पड़ते। जिन्हें कॉज़ेज़ पड़ते ही नहीं, उन्हें देहधारी परमात्मा ही कहा जाता है। स्त्री तो, आत्मा पर एक तरह का इफेक्ट है। स्त्री भी इफेक्ट है, पुरष भी इफेक्ट है। उसका इफेक्ट अपने पर नहीं पड़े तो ठीक है। अब स्त्री को आत्मा रूप देखो, *पुद्गल* (जो पुरण और गलन होता है) में क्या देखना है? ये आम सुंदर भी हजोते हैं और सड़ भी जाते हैं, इनमें क्या देखना? जो सड़े नहीं, बिगड़े नहीं, वह आत्मा है। उसे देखना है। हमें तो स्त्री भाव, पुरुष भाव ही नहीं है। हम उस बाज़ार में जाते ही नहीं।

'यह स्त्री है' ऐसा देखते हैं। जब पुरुष के अंदर रोग होगा तभी उसे स्त्री दिखाई देगी, वर्ना आत्मा ही दिखाई देगा और जब स्त्री ऐसा देखती है, कि 'यह पुरुष है' तो वह उस स्त्री का रोग है। निरोगी बनेगा तो मोक्ष होगा। इस समय हमारी निरोगी अवस्था है। इसलिए मुझे ऐसा विचार ही नहीं आता। पैकिंग अलग हैं, सिर्फ ऐसा रहता है और वह स्वाभाविक है। लेकिन ऐसा *लक्ष* (जागृति) रहे कि यह स्त्री है और यह पुरुष है, ऐसा सब झंझट नहीं है। वह तो यदि अंदर रोग होगा, तभी तक ऐसा दिखाएगा। जब तक यह रोग है, तब तक हमें परहेज़ के लिए क्या करना चाहिए? कि उपयोग जागृत रखना चाहिए। ऐसा दिखे कि तुरंत ही शुद्धात्मा देख लो। ऐसी भूल हुई, उसे 'देखतभूली' कहते हैं। पुरुष को पुरुष का रोग नहीं होगा, तो 'यह स्त्री है' ऐसा नहीं दिखाई देगा और स्त्री को स्त्री का रोग नहीं होगा, तो 'यह पुरुष है' ऐसा नहीं दिखाई देगा। सभी में आत्मा दिखाई देगा।

प्रश्नकर्ता : इतनी जागृति नहीं रह पाती न?

दादाश्री : जागृति नहीं रहेगी, तो मार ही खानी पड़ेगी। यह ब्रह्मचर्य तो जिसे बहुत जागृति रहे, उसीके काम का है।

क्रमिक मार्ग में तो स्त्री को आसपास रखते ही नहीं, क्योंकि वह बहुत बड़ा जोखिम है। स्त्री, पुरुष के लिए जोखिम है। पुरुष, स्त्री के लिए जोखिम है। लेकिन मेरा कहना है कि इसमें स्त्री का दोष नहीं है, स्त्री तो आत्मा है, दोष तेरे स्वभाव का है।

पेट्रोल और अग्नि साथ में नहीं रखने चाहिए

शास्त्रकारों ने कहा है, जगत् ने कहा है कि पेट्रोल और अग्नि दोनों साथ में नहीं रखने चाहिए। फिर भी, हमारे यहाँ ऐसा होता है तो इतना सावधान रहकर चलना है कि दियासलाई नहीं गिरनी चाहिए।

यहाँ इन स्त्रियों को, पुरुषों को हर एक को प्रतिक्रमण का साधन दिया है। दृष्टि बिगड़ी कि तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना, फिर जोखिमदारी मेरी। क्योंकि आपने प्रतिक्रमण किया, मेरी आज्ञा का पालन किया इसलिए सब जोखिमदारी मेरी। फिर आपको क्या चाहिए? यदि जोखिमदारी दादा ले लें तो, फिर क्या परेशानी है?

अपने ज्ञान के कारण बाहर तो दृष्टि गड़ती ही नहीं और यदि गड़े तो उखाड़कर फिर प्रतिक्रमण कर लेता है। पहले का माल भरा हुआ है इसलिए

गड़ती ज़रूर है, लेकिन उखाड़कर प्रतिक्रमण कर लेता है। ज़बरदस्त आलोचना-प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान, रहने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि नहीं बिगड़े और मन साफ रहे, उसके लिए तो कितनी अधिक जागृति रखनी पड़ेगी?

दादाश्री : ओहोहो, यदि उसके लिए जागृति नहीं रखेगा, तब फिर और क्या करना है? वे फाइलें तो अगले जन्म में भी फिर से चिपकेंगी। पिछले जन्म से चिपकी हुई हैं, उन्हें ज्ञान से उखाड़ फेंक देना। नई नहीं चिपके, वही देखना है न!

दादा को बताते ही, खत्म हो जाता है सब

प्रश्नकर्ता : स्वभाव की वजह से, प्राकृतिक गुणधर्म की वजह से अन्य कहीं दृष्टि बिगड़ जाए तो उस चीज़ को कैसे खत्म कर सकते हैं?

दादाश्री : हमारे पास उसे मिटाने की सभी दवाईयाँ हैं। इस वर्ल्ड में ऐसी कोई दवाई नहीं है जो कि हमारे पास नहीं हो। इन लड़कों को हमने ब्रह्मचर्यव्रत दिया है। अब ब्रह्मचर्यव्रत लेने के बावजूद भी यदि कोई स्त्री उनके सामने आ जाए और उनकी दृष्टि आकृष्ट हो जाए, और अगर उनका मन भी बिगड़ जाए, तो इसे मैं दोष नहीं कहता लेकिन अगर ऐसा हो जाए तो उसे फिर तुरंत मिटा देना है। क्योंकि हमने साबुन दिया है। मैं रास्ते पर से गुज़र रहा होऊँ और मेरे कपड़े पर दाग़ लग जाए अगर मुझे उसे तुरंत धोना आता हो, तो फिर मैं आपके यहाँ साफ-सुथरा होकर आऊँगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : पिछले जन्म में जो गलती हुई थी, उसी वजह से इस जन्म में नज़र पड़ जाती है। हमें नज़र नहीं डालनी हो फिर भी नज़र पड़ जाती है। नज़र पड़ने के बाद हमें आकर्षित नहीं होना हो, फिर भी वापस मन आकर्षित हो जाता है। यानी कि पिछला हिसाब है, इसलिए ऐसा सब हो रहा है। वहाँ पर हमें प्रतिक्रमण करके छूट जाना चाहिए, इसके बावजूद भी अगर वापस नज़र पड़ जाए तो फिर से प्रतिक्रमण करना चाहिए, इस तरह सौ-सौ बार प्रतिक्रमण करोगे तब छूटा जा सकेगा। कुछ पाँच प्रतिक्रमण से छूट जाती हैं। कुछ एक प्रतिक्रमण से छूट जाती हैं।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने के बावजूद वहाँ चला जाए, तो वह कमज़ोरी ही है न? या फिर नीयत चोर हो जाती है? या फिर अंदर, मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार खुद को ठगने लगे है?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करने के बावजूद भी कार्य हो जाए, तब तो फिर वह 'व्यवस्थित' है। वह 'व्यवस्थित' के हाथ में आ गया ऐसा कहा जाएगा, वह व्यवस्थित की गलती है। फिर भी यदि ऐसा बहुत ज़्यादा हो रहा हो, तब उसके लिए खास उपवास वगैरह दंड लेना चाहिए, मन को जो भाता हो, उस दिन वह चीज़ कम खाना। ऐसा कोई दंड देना चाहिए। इसे बींधना कहते हैं। जिस तरह गोली चलाते ही एक्ज़ेक्ट जगह पर लगती है, उसी तरह इसे भी बींधना कहा जाता है। इससे कर्म नहीं बंधते। अतः वापस से यह गलती हो जाए तो वहाँ हमें प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

जब अंदर बिगड़ जाए, उस समय तो प्रतिक्रमण करके धो देना चाहिए और फिर रूबरू आकर दादा से कह देना चाहिए कि 'इस तरह

हमारा मन बहुत बिगड़ गया था। दादा, आपसे कुछ छिपाकर नहीं रखना है।' ताकि सब खत्म हो जाए। यहीं के यहीं दवाई दे देंगे। अन्य किसी के प्रति दोष हुआ होगा न तो हम धो देंगे।

जहाँ दृष्टि आकृष्ट, वहाँ अंदर रुचि पड़ी है

प्रश्नकर्ता : बार-बार दृष्टि आकृष्ट हो जाती है, एक ही जगह पर दृष्टि आकृष्ट होती है। वह तो यदि इन्टरेस्ट (रुचि) हो तभी न! क्या ऐसा नहीं कह सकते?

दादाश्री : इन्टरेस्ट ही है न? इन्टरेस्ट के बिना तो दृष्टि आकृष्ट होगी ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : अंदर रुचि है तो सही। दृष्टि आकृष्ट हो जाए तो उसके लिए प्रतिक्रमण होता है। फिर रात होते ही वापस दृष्टि उधर ही जाती है। रुचि हो जाए, तो उसका प्रतिक्रमण हो जाता है, वह चेप्टर (प्रकरण) खत्म हो जाता है। वापस पाँच-दस मिनट तक असर रहता है। तब लगता है कि यह क्या गड़बड़ है?

दादाश्री : उसे वापस धो देना चाहिए। इतना ही, बस।

प्रश्नकर्ता : बस इतना ही? बाकी मन में कुछ नहीं रखना है?

दादाश्री : यह माल हमने भरा है और ज़िम्मेदारी अपनी है। इसलिए हमें देखते रहना है, धोने में कमी नहीं रह जानी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कपड़ा धुल चुका है, ऐसा किसे कहेंगे?

दादाश्री : हमें खुद को ही पता चल जाएगा कि मैंने धो दिया। प्रतिक्रमण करते हैं, उस पर से।

प्रश्नकर्ता : क्या अंदर खेद रहना चाहिए?

दादाश्री : खेद तो रहना ही चाहिए न? खेद तो, जब तक इसका निबेड़ा नहीं आ जाए, तब तक खेद तो रहना ही चाहिए। हमें तो देखते रहना है कि खेद रखता है या नहीं। इस तरह से हमें अपना काम करना है, वह अपना काम करेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, अपना यह जो भरा हुआ माल है, वह इसी जन्म में बदल जाएगा न?

दादाश्री : वह तो सारा बदल जाएगा। हमने बदलने का निश्चय किया तो सबकुछ बदल ही जाएगा न! यह तो सारा पुराना नुकसान। अब वह धंधा बंद कर दिया।

शुद्धात्मा की जागृति होते ही दृष्टि निर्मल

कोई स्त्री खड़ी हुई हो, उसे देखा लेकिन तुरंत नज़र वापस खींच ली। फिर भी वह दृष्टि तो वापस वहीं के वहीं जाती है, इस तरह दृष्टि वहीं आकृष्ट होती रहे तो वह 'फाइल' कहलाती है। यानी इस काल में इतनी ही गलती को समझ लेना है। पिछली जो फाइल खड़ी हुई हो, भले ही छोटी सी भी, लेकिन 'फाइल' कि जो हमें आकर्षित करे ऐसी हो, ऐसा हमें पता चले कि यह 'फाइल' है तो वहाँ पर सावधान रहना है। अब सावधान रहने के अलावा और क्या करना है? जिसे शुद्धात्मा देखना आ गया है, उसे उसके शुद्धात्मा देखते रहना है। उससे वह पूरी तरह से चला जाएगा।

प्रश्नकर्ता : साथ-साथ प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान भी करना है न?

दादाश्री : हाँ, वह तो करना ही पड़ेगा न!

प्रश्नकर्ता : आकर्षण की फाइल कहीं

'कन्टिन्युअस' नहीं रहती। लेकिन जब यह आकर्षण उत्पन्न होता है, जैसे यहाँ पर लोहचुंबक रखा हो और पिन का यहाँ से गुजरना और खिंच जाना, लेकिन तुरंत पता चल जाता है कि खिंच गया, तो फिर तुरंत ही वापस खींच लेना चाहिए।

दादाश्री : जितना भी पता चलता है वह इस 'ज्ञान' की वजह से पता चलता है, वर्ना दूसरा तो मूर्छित हो जाए। इस 'ज्ञान' की वजह से पता चलता है इसलिए फिर हमें उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। फिर हमें निर्मल दृष्टि दिखानी चाहिए। अपने में रोग होगा तभी सामने वाला व्यक्ति अपना रोग पकड़ सकेगा न? और यदि वह अपनी निर्मल दृष्टि देखे तो? दृष्टि निर्मल करना आता है या नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : ज़रा और समझाइए कि दृष्टि कैसे निर्मल करनी है?

दादाश्री : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' इस जागृति में आ जाने के बाद, फिर दृष्टि निर्मल हो जाती है। अगर नहीं हुई हो तो शब्दों में पाँच-दस बार बोलना कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' तब भी वापस आ जाएगा और 'दादा भगवान जैसा निर्विकारी हूँ, निर्विकारी हूँ' ऐसा बोलेंगे तब भी वापस आ जाएगा। इसका उपयोग करना पड़ेगा, बाकी कुछ नहीं। यह तो विज्ञान है, तुरंत फल देता है और यदि ज़रा सा भी गाफिल रहा तो दूसरी तरफ फेंक दे, ऐसा है!

पक्का समझ लो कि विषय में सुख नहीं है

हमने तो कई जन्मों से भाव किए थे। इसलिए हमें तो विषय के प्रति बहुत ही चिढ़ थी। ऐसा करते-करते वे छूट गए। मूलतः विषय हमें अच्छा ही नहीं लगता था लेकिन क्या करें? कैसे छूटें? लेकिन हमारी दृष्टि बहुत गहरी, बहुत विचारशील, यों कैसे भी कपड़े पहने हों, फिर भी सबकुछ आरपार दिखाई देता था, दृष्टि की वजह से यों ही चारों ओर का बहुत कुछ दिखाई देता था। इसलिए राग नहीं होता न? हमें और क्या हुआ कि आत्मसुख प्राप्त हुआ। जलेबी खाने के बाद चाय फीकी लगती है। उसी तरह जिसे आत्मा का सुख प्राप्त हो गया, उसे सभी विषयसुख फीके लगते हैं।

तुझे फीका नहीं लगता? जैसा पहले लगता था, वैसा अब नहीं लगता न?

प्रश्नकर्ता : फीका तो लगता है, लेकिन वापस मोह उत्पन्न हो जाता है।

दादाश्री : मोह तो उत्पन्न हो सकता है। वह तो कर्म का उदय होता है। कर्म बंधे हुए हैं, वे मोह उत्पन्न करवाते हैं लेकिन आपको क्या ऐसा लगता है कि खरा सुख तो आत्मा में ही है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो ठीक है। इस विषय में सुख नहीं है, यह तो पक्का समझ में आ गया है।

दादाश्री : अन्य किसी स्त्री को देखे तो तुझे विचार नहीं आता न?

प्रश्नकर्ता : आता है, कभी-कभार।

दादाश्री : ऐसा होता है, इसका मतलब अभी भी कमी है।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ यों साधारण मोह ही होता है, और कुछ नहीं।

दादाश्री : मोह तो फिर घसीट ही ले जाएगा न! इस विषय को जीतना तो बहुत कठिन चीज़ है। इसे हमारे ज्ञान से जीता जा सकता है। यह ज्ञान निरंतर सुखदायी है न, इसलिए जीत सकते हैं।

श्री विज्ञन के प्रयोग से छूटे दृष्टि दोष

मैंने जो प्रयोग किया था, उसी प्रयोग का उपयोग करना है। हमारे अंदर वह प्रयोग निरंतर सेट ही रहता है, इसलिए हमें ज्ञान होने से पहले भी जागृति रहती थी। यों सुंदर कपड़े पहने हों, दो हज़ार की साड़ी पहनी हो फिर भी देखते ही तुरंत जागृति आ जाती थी, वह नेकेड दिखाई देती थी। फिर दूसरी जागृति उत्पन्न होती थी, तो बिना चमड़ी की दिखाई देती और तीसरी जागृति में फिर पेट काट दिया हो तो अंदर आंते दिखती थी, आंतों में क्या-क्या होता है, वह सबकुछ दिखाई देता था। अंदर खून की नसें दिखाई देती थीं, संडास दिखाई देता था, इस तरह सारी गंदगी दिखाई देती। फिर विषय खड़ा होता ही नहीं था न! इनमें से सिर्फ आत्मा ही शुद्ध वस्तु है, वहाँ जाकर हमारी दृष्टि रुकती है, फिर मोह कैसे होगा? लोगों को इस तरह आरपार दिखाई नहीं देता न? लोगों के पास ऐसी दृष्टि नहीं है न? ऐसी जागृति लाएँ भी कहाँ से? ऐसा दिखना, वह तो बहुत बड़ी जागृति कहलाती है। एट-ए-टाइम ये तीनों प्रकार की जागृति रहती हैं। मुझे जैसी जागृति थी, वह आपको बता रहा हूँ। जिस तरीके से मैंने जीता है, जीतने का वही तरीका आप सभी को बता दिया। रास्ता तो होना चाहिए न? और जागृति के बिना तो ऐसा कभी हो ही नहीं पाएगा न?

यह काल तो इतना विचित्र है! पहले तो लिपस्टिक और चेहरे पर पाउडर, यह सब कहाँ लगाते थे? जबकि अभी तो ऐसा सब खड़ा किया है कि बल्कि आकृष्ट करता है लोगों को। ऐसा सारा मोह बाज़ार हो गया है! पहले तो अगर शरीर अच्छा होता, खूबसूरत होता था तब भी ऐसे मोह के साधन नहीं थे। अभी तो निरा मोह बाज़ार ही है न? उससे बदसूरत लोग भी सुंदर दिखाई देता है, लेकिन इसमें देखना क्या है? यह तो निरी गंदगी!

इसलिए मुझे तो बहुत जागृति रहती है, ज़बरदस्त जागृति रहती है! अपना ज्ञान जागृति वाला है, एट-ए-टाइम लाइट करनी हो तो हो सकती है! अब यदि उस समय ऐसी जागृति का उपयोग न करे तो इंसान मारा जाएगा। हम कितना भी शुद्धात्मा देखने जाएँ, फिर भी वह दृष्टि को स्थिर नहीं होने देता, अतः ऐसा उपयोग चाहिए। हमारा ज्ञान होने से पहले ऐसा उपयोग सेट था, वर्ना यह मोह बाज़ार तो मार ही डाले इस काल में। यह तो स्त्रियों को देखने से ही रोग घुस जाता है न! क्या वह शादीशुदा नहीं है? शादीशुदा है फिर भी ऐसे! क्योंकि यह काल ही ऐसा है। यह श्री विज्ञन याद रहेगा या भूल जाओगे?

प्रश्नकर्ता : दृढ़ निश्चय होने के बावजूद किसी स्त्री की ओर बार-बार दृष्टि आकृष्ट होती है और श्री विज्ञन जानने के बावजूद 'जैसा है वैसा' क्यों नहीं दिखाई देता है?

दादाश्री : उसने श्री विज्ञन जाना नहीं है, श्री विज्ञन जान ले तो उसकी दृष्टि आकृष्ट ही नहीं होगी। श्री विज्ञन दिखे तो उसमें पड़ेगा ही नहीं। जबकि यह तो दृष्टि पड़े तो वापस देख लेता है।

प्रश्नकर्ता : यह जो श्री विज्ञन नहीं दिखाई देता, क्या वह मोह के कारण है?

दादाश्री : श्री विज्ञन क्या है, वह जानता ही नहीं है। मोह के कारण भान में ही नहीं आता और मोह यानी अभानता।

प्रश्नकर्ता : तो फिर अब श्री विज्ञन देखने का उपाय क्या है?

दादाश्री : वह दिखाई नहीं देगा। उसका उपाय ही क्या करना? वह जिसे दिखाई देता है, वे इंसान अलग ही तरह के होते हैं। गज़ब के इंसान होते हैं।

इस काल में इंसान को इतना वैराग्य नहीं रह पाता! अत: यह थ्री विज़न बहुत ऊँची चीज़ है, उससे फिर वैराग्य रहता है। हमने कम उम्र से ही ऐसा प्रयोग किया था। खोज की कि सब से बड़ा रोग यही है। फिर इस जागृति से प्रयोग किया, बाद में तो हमें सहज हो गया। हमें यों ही सबकुछ आसानी से दिखाई देता है। दो-चार बार गटर का ढक्कन खोलना होता है, फिर पता नहीं चलेगा कि अंदर क्या है? बाद में वैसा गटर आए तो पता नहीं चलेगा? शायद दो-चार बार गलती हो जाए, लेकिन बाद में तो ध्यान रहेगा न?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कोई रास्ता नहीं है, शॉर्टकट ही नहीं है कि थ्री विज़न से पहले ही आरपार साफ दिखाई दे?

दादाश्री : यही शॉर्टकट है! सब से बड़ा शॉर्टकट यही है न! इस थ्री विज़न से अभ्यास करते-करते आगे बढ़ेगा तो 'जैसा है वैसा' उसे दिखाई देगा, फिर विषय छूट जाएगा। थ्री विज़न सिवा का रास्ता, उल्टे रास्ते पर चलने का शॉर्ट रास्ता है। हमें सबकुछ आरपार दिखाई देता है। यह ज्ञान ऐसा है कि कभी न कभी आपकी ऐसी दृष्टि करवा देगा। क्योंकि ज्ञान देने वाले की दृष्टि ऐसी है, मेरी दृष्टि ऐसी है। यानी जैसी ज्ञान देने वाले की दृष्टि होगी वैसी ही दृष्टि हो जाएगी। जिसे आरपार दिखता है, उसे मोह कैसे होगा फिर? थ्री विज़न से तो सबकुछ ठीक हो ही जाता है न!

ज्ञानी का जागृत दर्शन

अणहक्क का हो तो लोग मारने दौड़ते हैं, ऐसा क्यों? *अणहक्क* का डाका डाला, इसलिए! *अणहक्क* का डाका क्या जान-बूझकर डालते हैं? नहीं, वह तो दृष्टि ही ऐसी हो गई है। लोगों की दृष्टि तो तरह-तरह की होती है। आपकी दृष्टि भले ही सीधी हो, फिर भी वह स्त्री आपकी दृष्टि आकृष्ट कर लेगी। अत: वहाँ फिर नज़र मिलाओ तो झंझट हो जाएगा न! ज्ञानी पुरुष को तो किसी के भी सामने देखने में हर्ज नहीं है। क्योंकि उनके पास तो हर तरह के 'लॉक एन्ड की' होते हैं, उनके सामने किसी की भी नहीं चलती। लेकिन सभी तरह के 'लॉक एन्ड की' कब मिलते हैं? जब विषय बंद हो जाए, उसके बाद। यानी ज्ञानी पुरुष में विषय होता ही नहीं है, इसलिए उनके पास ऐसा व्यवहार ही नहीं आता न? विषय कब जाता है? विषय तो जागृति से जाता है। विषय यों ही चला जाए, ऐसा नहीं है। अंतिम विषय, एक हक़ का विषय भी कब छूटता है? जागृति हो तभी।

हमें तो 'थ्री विज़न' से एक ही सेकन्ड में सब आरपार दिखाई देता है। हमारा दर्शन इतना उच्च है कि फिर रोग उत्पन्न ही कैसे हो? अब इतनी जागृति होगी, तब जाकर अंतिम स्टेशन तक पहुँच पाएँगे। पूरी दुनिया में ऐसी जागृति वाले कितने होंगे? सौ-दो सौ लोग होंगे न? किसी भी काल में एक भी व्यक्ति ऐसी जागृति वाला नहीं होता। इस काल में, यह मैं अकेला ही हूँ। ऐसी जागृति वाले कहीं होते होंगे? खुद देहधारी होने पर भी ऐसी जागृति कहीं रहती होगी? बड़ा साइन्टिस्ट हो या मानस शास्त्री हो, लेकिन ऐसी जागृति रह ही नहीं पाती न!

और हमें *पुद्‌गल* के प्रति राग ही नहीं है न! मेरे ही *पुद्‌गल* के प्रति मुझे राग नहीं है। *पुद्‌गल* से मैं सर्वथा जुदा ही रहता हूँ। खुद के *पुद्‌गल* के प्रति जिसे राग होता है, उसे दूसरों के *पुद्‌गल* के प्रति राग होता है। अनंत जन्मों से यही का यही भोगा है, फिर भी नहीं छूटता। यह आश्चर्य ही है न! जब कितने ही जन्मों से विषय सुख का विरोधी हो चुका हो, विषय सुख के बारे में आवरण रहित दृष्टि से बहुत ही सोचा हो, जब ज़बरदस्त वैराग्य उत्पन्न हो चुका हो, तब विषय छूट सकता है। वैराग्य कब उत्पन्न होता है? जब उसे अंदर जैसा है वैसा दिखाई दे, तब।

जिनमें राग नामक रोग नहीं है, ऐसे वीतराग की कृपा से अनंत काल का रोग चला जाता है।

उल्टी दृष्टि, वही है भूल

स्त्री का दोष नहीं है, अपनी भूल का दोष है, अपनी समझ का दोष है। स्त्री का क्या दोष? यदि स्त्री में दोष होता तो फिर ये भैंसें भी स्त्री ही हैं न? लोग वहाँ क्यों आकृष्ट नहीं होते? अपनी उल्टी समझ के कारण खिंच जाते हैं। वह उल्टी समझ निकाल देंगे तो सब निकल जाएगा और कभी न कभी यह उल्टी समझ निकाले बगैर चारा ही नहीं है न? यह गंद है, इतनी अधिक गंद है कि मेरी तो उसके प्रति चिढ़ ही नहीं जाती!

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसके बजाय स्त्रियों को शुद्ध स्वरूप में, शक्ति के रूप में, आत्मा के रूप में देखें तो?

दादाश्री : शुद्ध रूप में देखेंगे तो बहुत अच्छा कहा जाएगा! हम स्त्रियों को शुद्ध स्वरूप में ही देखते हैं, इसलिए हमें बहुत आनंद होता है। शुद्ध स्वरूप में देखने जाएँ तब स्त्री तो बॉक्स है, पैकिंग है। इसमें उस बेचारी का क्या दोष? अपनी ही झंझट है, अपनी दृष्टि उल्टी है। दृष्टि बदल लेंगे तो हमें कुछ छूएगा ही नहीं। अपनी दृष्टि उल्टी है, वही भूल है। उसमें किसी का क्या दोष?

लेकिन यह सब यों ही हो पाए, ऐसा नहीं है। बहुत-बहुत सोचा जाए, तब जाकर यह छूटेगा। लेकिन ऐसा बहुत सोचने से भी थक जाएँगे, ऐसा है। अत: यदि किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना हो जाए कि हम उनके साथ रहें तो हम भी उन जैसे बन जाएँगे, बिना कुछ किए उन जैसे बन जाएँगे, उनका प्रभाव पड़ता रहेगा अपने पर और हम उसी रूप होते जाएँगे। यानी वस्तुस्थिति में अन्य कोई उपाय नहीं है। हमें पहले सारी उलझनें दिखाई दी थीं! पूरा स्थूल भाग सोचकर और पूरा सूक्ष्म भाग दर्शन से देख लिया था! इसीलिए तो जगत् की सारी उलझनें सुलझा देते हैं न!

दर्शन मोह से खड़ा है संसार

अनंत जन्मों से दर्शन मोह के कारण ही यह संसार जंजाल खड़ा हो गया है। जब सम्यक् दर्शन होता है, तब दर्शन मोह टूटता है। जगत् क्यों खड़ा है? दर्शन मोह से। इतना कुछ करने के बावजूद भी क्यों मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाते? दर्शन मोह बाधक है। किसी व्यक्ति ने रात को खाना खाया, लेकिन सवेरे फिर से ज़ोरदार भूख लगे, तो वह सुनार की दुकान या साड़ी की दुकान नहीं देखता। लेकिन उसे तो हलवाई की दुकान ही दिखाई देगी। ऐसा क्यों? क्योंकि उसका चित्त खाने के लिए ही भटकता रहता है। देह में जब भूख का 'इफेक्ट' होने लगे, तब खाने का मोह होता रहता है, वह दर्शन मोह है। देह को विषय

की भूख लगे तो स्त्री के प्रति मोह जागता है। इस तरह इस दर्शन मोह से तो अगले जन्म के बीज डालता है न? इससे अगले जन्म का संसार खड़ा करता है। वीतराग को किसी की नज़र नहीं लगती। अतः यदि संसार से छूटना हो तो वीतराग बन। लेकिन वीतराग कैसे बन सकते हैं? जिससे दर्शन मोह टूटे, ऐसा कोई उपाय कर! दर्शन मोह से संसार खड़ा है।

आपने कहीं अच्छी भिंडियाँ देखीं, तो आपकी आँखें वहीं चिपक जाती हैं। जहाँ कुछ अच्छा देखे, वहीं नज़र चिपक जाती है। नज़र चिपकी कि संसार खड़ा हो गया। यह जगत् खुली आँखों से देखने योग्य है ही नहीं। उसमें भी कलियुग में तो भयंकर असर होता है। इन आँखों से तो पूरा संसार खड़ा हो जाता है।

अपने दृष्टि दोष को जो कम करे, वही धर्म है। जो दृष्टि दोष को बढ़ाए, वह अधर्म है। यह संसार दृष्टि दोष का ही परिणाम है।

जिन्हें मोक्ष में जाना है, उन्हें स्त्री जाति को या स्त्री को पुरुष जाति को दृष्टि गड़ाकर देखना ही बंद कर देना चाहिए। वर्ना इसका निबेड़ा ही नहीं आएगा। यह चमड़ी निकाल दी जाए तो क्या दिखाई देगा? लेकिन ये लोग तो यों भी इतनी बदबू मारते हैं कि ऐसा होता है कि 'न जाने ये कैसे लोग हैं?' पहले के समय में ऐसी स्त्रियाँ होती थीं, पद्मिनी-स्त्रियाँ, जिनकी सुगंध आती थी। कुछ दूरी पर बैठी होतीं फिर भी यहाँ तक सुगंध आती थी। आजकल तो पुरुषों में बरकत ही नहीं है और स्त्रियों में भी बरकत नहीं है। सारा फेंक देने जैसा माल, निकाल देने जैसा माल है, रबिश मटिरियल्स। उसके प्रति फिर मोह करता है। अरे! इसमें मोह करने जैसा क्या लगा तुझे? क्यों? गोरी चमड़ी है, इसलिए? सीलबंद पेट्रोल के डिब्बे हों, जिनमें से हवा तक न निकल पाए ऐसे हों, फिर भी इस रूम में कोई बीड़ी पीए, फिर भी डिब्बे जल उठेंगे। अतः स्त्री-पुरुषों को 'बिवेयर ऑफ पेट्रोल' ऐसा बोर्ड लगाना चाहिए।

आँखें गड़ाने पर दृष्टि बिगड़ेगी ही न!

किसी भी एक तरफ हृदय तो लगा ही रहता है, या तो इस तरफ लगा रहता है या उस तरफ रहता है। यहाँ से छूट जाए तो वहाँ लग जाता है, उसके लिए हमें बैठे नहीं रहना चाहिए। इसलिए बहुत सावधान रहने जैसा है। हम यहाँ से छोड़ेंगे, तभी वहाँ लगेगा न? और वहाँ चिपकने लगे उससे पहले ही सावधान हो जाना। आँखें तो गड़ानी ही नहीं चाहिए, नीचे देखकर ही चलना। तू किसी के सामने आँखें नहीं गड़ाता न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब तो बहुत समझदार है, तू जीत गया। आँखें तो कभी भी मत गड़ाना, बहुत शोर मचाए फिर भी। वर्ना यहाँ इस सत्संग में जितना दिल लगा हुआ होगा तो वह भी हट जाएगा।

दूषमकाल में नज़र को संभालना। यह दूषमकाल है, इसलिए सावधान रहो, अभी भी सावधान हो जाओ। दृष्टि तो बिल्कुल शुद्ध रहनी चाहिए। पहले के ज़माने के सख्त लोग तो आँखें फोड़ देते थे। हमें आखें नहीं फोड़ देनी हैं, वह तो मूर्खता है। हमें आँखें फेर लेनी हैं, उसके बावजूद भी अगर देख लिया तो प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। यह प्रतिक्रमण तो एक मिनिट के लिए भी मत चूकना। खाने-पीने में गलती हो

जाए तो चलेगा, लेकिन आँखें गड़ाकर देख ही कैसे सकते हैं? संसार में सब से बड़ा रोग यही है, इसी की वजह से संसार खड़ा है। विषय की नींव पर संसार खड़ा है, मूल में विषय ही है।

विषय तो किसी को भी अच्छा नहीं लगता, लेकिन ये पहले के हिसाब हो चुके हैं, और आँखें गड़ाते ही हिसाब शुरू हो जाता है। वह फिर छोड़ता नहीं है। ये सभी स्त्रियाँ कहीं आपको आकर्षित नहीं करती। जो आकर्षित करती हैं, वह अपना पिछला हिसाब है। इसलिए वहाँ से उखाड़कर फेंक दो, साफ कर दो। अपने ज्ञान के बाद कोई परेशानी नहीं आती, मात्र एक विषय के लिए ही हम सावधान करते हैं। आँखें गड़ाना ही गुनाह है और यह समझने के बाद जोखिमदारी बहुत बढ़ जाती है, इसलिए किसी के सामने आँखें मत गड़ाना। आँखें गड़ाने से ही सबकुछ बिगड़ता है। दृष्टि बिगड़ती है, वह भी एकदम से नहीं बिगड़ती। पहले का हिसाब हो तभी आकर्षण होता है। मूल दृष्टि नहीं बिगड़ती, बिगड़ी हुई दृष्टि ही बिगड़ती है।

दृष्टि दोष से वीर्यशक्ति का अधोगमन

यदि सावधान रहने जैसा हो तो वह सिर्फ विषय से। सिर्फ विषय को जीत ले तो बहुत हो गया। उसका विचार आने से पहले ही उखाड़ देना पड़ेगा। अंदर विचार उगा कि तुरंत ही उखाड़ देना पड़ेगा। दूसरा, यों अगर नज़र मिल गई किसी से तो तुरंत हटा देनी पड़ेगी। वर्ना वह पौधा ज़रा भी बड़ा हुआ कि तुरंत उसमें से वापस बीज डलेंगे। इसलिए उस (विषय के) पौधे को तो उगते ही निकाल देना पड़ेगा। तुम्हें पता चले कि यह गुलाब का पौधा नहीं है, यह कुछ और है, तो तुरंत उखाड़कर फेंक देना।

बाकी, विषय के लिए तो जैन धर्म में क्या कहा है कि ज़हर खाकर मर जाना, लेकिन विषय मत करना। ब्रह्मचर्य टूटना ही नहीं चाहिए, ऐसा जैन धर्म कहता है। लेकिन हमने यहाँ अक्रम मार्ग में इसमें छूट दी है कि, भाई, पत्नी हो तो घर पर रहना और अन्यत्र दृष्टि मत बिगाड़ना। यदि पत्नी नहीं हो तो प्रतिक्रमण करते रहना। क्योंकि इससे, जो वीर्य अधोगामी जा रहा होगा, वह ऊर्ध्वगामी हो सकता है। वीर्य निरंतर अधोगामी स्वभाव का है। उसे रोको, (ब्रह्मचर्य के लिए प्रार्थना-)विधि करो और प्रतिक्रमण करो, तो ऐसे करते-करते सब ऊर्ध्वगामी हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : जब वीर्य का *गलन* (डिस्चार्ज) होता है, तो वह *पुद्गल* स्वभाव में होता है या फिर कहीं पर हमारा लीकेज हो, तब होता है?

दादाश्री : किसी को देखकर तुम्हारी दृष्टि बिगड़ जाए, तब वीर्य का कुछ हिस्सा 'इग्ज़ॉस्ट' हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह तो विचारों से भी हो जाता है।

दादाश्री : विचारों से भी 'इग्ज़ॉस्ट' होता है, दृष्टि से भी 'इग्ज़ॉस्ट' होता है। वह 'इग्ज़ॉस्ट' हुआ माल फिर डिस्चार्ज होता रहता है।

बाहर कुछ देखा और दृष्टि आकृष्ट हो तो समझना कि यह पहले का पड़ा हुआ बीज है। वह बीज जब उगे, तब आप क्या करते हो?

प्रश्नकर्ता : वहाँ प्रतिक्रमण हो ही जाता है।

दादाश्री : उसके तो निरंतर प्रतिक्रमण करते रहने पड़ेंगे। अपने को तो समझ में आता है कि अंदर यह बीज पड़ा हुआ है,

अत: यह तो बड़ा जोखिम है। यह विषय तो बहुत जोखिम वाली चीज़ है। सामने वाला व्यक्ति जहाँ-जहाँ जाए, वहाँ आपको जाना पड़ेगा। फिर सामने वाला व्यक्ति बेटा बनकर आएगा। यानी इतना बड़ा जोखिम खड़ा हो जाता है। तभी तो विषय के लिए हम यहाँ बहुत सख्ती रखते हैं न! अन्य सबकुछ चलाया जा सकता है, लेकिन विषय नहीं चलाया जा सकता। यह तो अक्रम विज्ञान है इसलिए इतना ही जोखिम रखा है।

दृष्टि चिपकने का फल हज़ारों सालों बाद भी आता है

दृष्टि का ज़रा भी विच्छेद नहीं होना चाहिए। किसी के प्रति अपनी दृष्टि खिंचे तो पूरे दिन प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। तूने कितना बड़ा बीज बोया होगा कि तेरी दृष्टि खिंचती रहती है? एक संत ने तो, उनकी दृष्टि खिंचती थी, इसलिए उन्होंने आँखों में मिर्च डाल दी, लेकिन हम ऐसा करने को नहीं कहते। हम ऐसा कहते हैं कि मिर्च मत डालना। हमें तो प्रतिक्रमण करते रहना है। उन्होंने मिर्च क्यों डाली होगी? कि आँख का दोष है इसलिए मिर्च डाली। आँखों को दंड दो, ऐसा कहते हैं। अरे! दोष तेरा है। 'आँखों को दंड दो', ऐसा क्यों कहता है? भैंस की भूल पर चरवाहे को मारता है।

कोई स्त्री बाहर सब्ज़ी-भाजी लेने निकले, तब किसी पुरुष को देखकर उसका चित्त वहाँ चिपक जाता है। ऐसे चित्त चिपकने से बीज डल जाते हैं। आते-जाते ऐसे पच्चीस-पचास पुरुषों के साथ बीज डलते हैं। ऐसा प्रतिदिन होता रहता है, ऐसे अनेक पुरुषों के साथ बीज डलते हैं। ऐसा ही पुरुषों को स्त्रियों के प्रति होता है। अब, अगर ज्ञान हाज़िर रहे तो बीज डलने बंद हो जाएँगे। फिर भी प्रतिक्रमण करने पर ही निबेड़ा आएगा। ये बीज तो मिश्रचेतन के संग डलते हैं। फिर मिश्रचेतन दावा करेगा। मिश्रचेतन तो कैसा होता है कि दोनों की मरज़ी में डिफरेन्स, दोनों का संचालन अलग। वहाँ खुद की इच्छा नहीं हो, फिर भी यदि सामने वाले को सुख भोगने को चाहिए, तो क्या होगा? उसमें से फिर राग-द्वेष के कारखाने शुरू हो जाएँगे। अपने पास तो ज्ञान है, इसलिए शुद्धात्मा देखकर, जो चित्त पर चिपका था उसे धो देना। वर्ना यदि चित्त चिपके तो उसका फल दो-पाँच हज़ार सालों बाद भी आ सकता है!

इस कलियुग की वजह से स्त्री-पुरुषों में आमने-सामने असर होता है। दोनों को संतोष हो, फिर भी यदि बाहर कुछ देखे, तो दृष्टि गड़ जाती है। वह सब से बड़ा भय सिग्नल है। इस दृष्टि में मिठास बर्ते, वह भी बहुत बड़ा जोखिम है। आप यदि मानी हों और आपको यदि कोई स्त्री मान दे तो आपकी दृष्टि खिंच जाएगी। कोई लोभी हो और उसे लोभ दे तो भी दृष्टि खिंच जाती है। फिर पूरा जीवन मटियामेट कर देता है!

अत: सावधान कहाँ रहना है कि स्त्री को पुरुष से और पुरुष को स्त्री से, बिल्कुल *लप्पन-छप्पन* (बेकार की बातें) नहीं करनी चाहिए, वर्ना वह तो भयंकर रोग है! उस विचार से ही मनुष्य को बेहोशी रहती है! तो फिर आत्मा की जागृति कब होगी? यानी कि इतना सावधान रहना है। क्या इसमें कुछ मुश्किल है?

प्रश्नकर्ता : वहाँ सावधान रहना चाहिए।

दादाश्री : इतनी सी चीज़ से ही दूर रहने

जैसा है। अन्य सभी चीज़ें हम छुड़वा देते है, रास्ता निकाल लेते हैं, लेकिन यहाँ तो चेतन मिश्रित हुआ न? यानी स्त्री–पुरुष दोनों को सावधान रहने जैसा है, भयंकर जोखिम है! हमेशा नज़रे झुकाकर ही रखना, हमारे मार्ग में अन्य कोई रोक नहीं है। घर में भी यही बातचीत करते रहना। ताकि घर के सब लोग समझ जाएँ कि दृष्टि ऊपर उठाने जैसा है ही नहीं।

'वराइअटीज़ ऑफ पैकिंग्स' हैं! इनका अंत आए, ऐसा नहीं है, लेकिन इतनी अधिक जागृति भी नहीं रह पाती। इसलिए तय ही कर लेना कि जो होना हो वह हो, लेकिन दृष्टि गड़ानी ही नहीं है। वर्ना बीज तो बहुत बड़े डल जाएँगे, जो अगला जन्म खत्म कर देंगे! वह जहाँ जाएगी, वहाँ इसे भी जाना पड़ेगा और फिर खत्म हो जाएगा।

जहाँ विषय हैं, वहाँ आत्मा को नहीं जाना

मोक्ष जाने में कुछ बाधक हो तो वह सिर्फ स्त्री विषय ही है और वह भी सिर्फ देखने मात्र से ही बहुत बाधक है। व्यवहार में इतना ही भय है, इतना ही भय सिग्नल है। अन्य कहीं पर भय सिग्नल नहीं है। इसलिए लड़कों को कह रखा है न, कि स्त्री की तरफ देखना भी मत और देख लो तो उसका उपाय दिया है। साबुन लगाकर धो देना। इस काल में सब से बड़ा पोइज़न हो तो वह विषय ही है। इस काल के मनुष्य ऐसे नहीं हैं कि जिन्हें ज़हर नहीं चढ़े। ये तो कमज़ोर हैं बेचारे। जैसा मनचाहे वैसे कहीं भी घूमोगे तो ज़हर चढ़ेगा या नहीं?! यह तो आज्ञा में रहते हैं इसलिए ज़हर नहीं चढ़ता लेकिन अगर आज्ञा में नहीं रहे तो? एक ही बार आज्ञा टूटी कि पोइज़न फैल जाएगा, तेज़ी से! इनकी बिसात ही नहीं न!

बाकी, जब तक स्त्री हो तब तक किसी को मोक्ष की आशा ही नहीं रखनी चाहिए। जब तक 'विषय हैं तब तक आत्मा को जाना ही नहीं है' ऐसा कहा जाता है। किसी की यदि स्त्री के प्रति दृष्टि जाए तो उसने ज़रा सा भी, अंशमात्र भी आत्मा को नहीं जाना है। उसने आत्मसुख का अनुभव ही नहीं किया है! वर्ना आत्मसुख तो कैसा होता है!

इतना ही जीतना है, स्त्री विषय! स्त्री के प्रति दृष्टि हुई, उस तरफ का विचार भी आया कि खत्म हो गया। मोक्ष की नींव ही उखड़ गई।

देखत भूली टले तो सर्व दुःखों का क्षय हो जाए

श्रीमद् राजचंद्र ने कहा है कि, '*देखत भूली टले तो सर्व दुःख नो क्षय थाय* ' शास्त्रों में पढ़ते हैं कि स्त्री पर राग नहीं करना चाहिए और वापस स्त्री को देखते ही भूल जाते हैं। उसे 'देखत भूली' कहते हैं। मैंने तो आपको ऐसा ज्ञान दिया है कि अब आपमें 'देखत भूली' भी नहीं रही। आपको शुद्धात्मा दिखेगा। बाहर का पैकिंग कैसा भी हो, फिर भी पैकिंग से हमें क्या लेना देना? पैकिंग तो सड़ जाएगी, जल जाएगी, पैकिंग से क्या पाओगे? इसलिए ज्ञान दिया है कि आप शुद्धात्मा देखो ताकि 'देखत भूली टले।' देखत भूली टले' यानी क्या कि यह मिथ्या दृष्टि है, वह दृष्टि बदल जाए और दृष्टि सम्यक् हो जाए तो सभी दुःखों का क्षय हो जाएगा! फिर वह गलती नहीं होने देगी, दृष्टि आकृष्ट नहीं होगी।

कृपालुदेव ने तो कितना कुछ कहा है, फिर भी कहते हैं कि 'देखत भूली' होती है, देखते हैं और गलती हो जाती है। देखत भूली टल जाए तो सभी दु:खों का क्षय हो जाएगा। तो 'देखत भूली' टालने का मैंने यह मार्ग बताया कि 'यह जो महिला जा रही हैं, उनमें तू शुद्धात्मा देखना।' तुझे शुद्धात्मा दिखाई देगे तो फिर देखने को और कुछ नहीं रहेगा। बाकी तो ज़ंग लगा हुआ है। किसी को लाल ज़ंग लगा होता है, किसी को पीला ज़ंग लगा होता है, किसी को हरा ज़ंग लगा होता है, लेकिन हमें तो सिर्फ लोहा ही देखना है न?! और ज़ंग दिख जाए तो उसके सामने उपाय दे दिया है। संयोगवश फँस जाए तो उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन इच्छापूर्वक नहीं होना चाहिए। संयोगवश तो ज्ञानी भी फँस सकते हैं।

यह विषय तो अविचार की वजह से है। सोचने से हमें फायदा-नुकसान का पता चलता है या नहीं? और जिसे विचार नहीं आते तो उसे फायदा-नुकसान का पता नहीं चलता न? उसी तरह यदि कोई सोचने वाला होगा तो यह विषय तो खड़ा ही नहीं रहेगा, लेकिन यह कालचक्र ऐसा है कि जलन में उसे हिताहित का भान ही नहीं रहा कि खुद का हित किस में है और अहित किस में? दूसरा, इस विषय के स्वरूप को समझपूर्वक बहुत सोचा हो तब भी अभी जो विषय खड़ा होता है, वह पहले के अविचारों का कारण है। इसलिए 'देखत भूली' टलती नहीं है न! विषय का विचार नहीं आया हो, लेकिन कहीं पर ऐसा देखने में आ जाए, तो भी तुरंत ही भूल हो जाती है। देखे और भूल जाए, ऐसा होता है या नहीं?

'देखत भूली' का अर्थ क्या है? मिथ्यादर्शन! लेकिन बाकी सब 'देखत भूली' हो तो उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन इस विषय से संबंधित, चारित्र से संबंधित 'देखत भूली' का उपाय क्या है? अगर ज्ञान मिला हो तो खुद को गलती का पता चलता है कि 'यहाँ पर यह गलती हुई, यहाँ मेरी दृष्टि बिगड़ गई थी।' वहाँ पर फिर खुद आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करके धो देता है। लेकिन जिसे यह ज्ञान नहीं मिला है, वह क्या करेगा बेचारा? उसे तो भयंकर झूठी चीज़ को सच मानकर चलना पड़ता है। यह आश्चर्य है न! यह तो जिसे ज्ञान मिल गया है, उसे दिक्कत नहीं है, वह तो दृष्टि बिगड़ी कि तुरंत धो देता है।

यदि आपका शुद्ध उपयोग है, तो सामने वाले का कैसा भी भाव हो तब भी आपको छू नहीं पाएगा!

इस 'ज्ञान' की प्राप्ति के बाद में देखत भूली बंद हो जाती है! हम तो सामने वाले व्यक्ति में 'शुद्धात्मा' ही देखें, फिर हमें दूसरा भाव क्यों उत्पन्न होगा? नहीं तो मनुष्यों को तो कुत्ते पर भी राग हो जाता है, बहुत अधिक सुंदर हो तो उस पर भी राग हो जाता है। हम शुद्धात्मा देखेंगे तो राग होगा? यानी हमें शुद्धात्मा ही देखने हैं। यह देखत भूली टले ऐसी है नहीं और यदि टल जाए तो सब दु:खों का क्षय हो जाएगा। यदि दिव्यचक्षु हों तो देखत भूली टल सकती है, नहीं तो किस तरह टल सकती है?

प्रश्नकर्ता : 'देखत भूली' टल जाए तो क्या होगा?

दादाश्री : 'देखत भूली' टले तो सर्व दु:खों का क्षय हो जाएगा, मोक्ष हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : उसका अर्थ यह कि राग भी नहीं होना चाहिए और भूल जाना चाहिए?

दादाश्री : अपना यह ज्ञान ऐसा है न कि राग हो, ऐसा तो है ही नहीं, परंतु आकर्षण हो उस घड़ी उसके शुद्धात्मा देखोगे तो आकर्षण नहीं होगा। 'देखत भूली' अर्थात् देखे और भूल कर बैठे! जब तक देखा नहीं हो तब तक भूल नहीं होती। जब तक आप कमरे में बैठे रहो, तब तक कुछ नहीं होता, परंतु विवाह समारोह में गए और देखा कि फिर भूलें होती हैं वापस। वहाँ आप शुद्धात्मा देखते रहोगे, तो दूसरा कोई भाव उत्पन्न नहीं होगा और भाव उत्पन्न हो गया हो, उसके पूर्वकर्म के धक्के से, तो उसका प्रतिक्रमण कर देना, यही उपाय है। यहाँ घर में बैठे थे, तब तक मन में कुछ भी खराब विचार नहीं आ रहे थे और कहीं विवाह में गए कि विषय के विचार उत्पन्न हुए। संयोग मिला कि विचार उत्पन्न होते हैं। यह 'देखत भूली' सिर्फ दिव्यचक्षु से ही टल सकती है।

जब तक जिस बारे में अंध है, तब तक उस बारे में दृष्टि खिलती ही नहीं, बल्कि और ज़्यादा अंध होता जाता है। उससे दूर रहने के बाद उससे छूट सकता है। फिर उसकी दृष्टि खिलती जाएगी, उसके बाद समझ में आता जाएगा।

अनादिकाल से आराधन किया हुआ, समझ से छूटेगा

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा है कि विषय समझ से जाएगा? जैसे-जैसे समझ बढ़ती जाएगी, वैसे विषय चला जाएगा।

दादाश्री : समझ से ही चला जाएगा। यदि ऐसा समझ में आ गया न कि 'यह साँप ज़हरीला है और अगर काट लेगा तो तुरंत मर जाएँगे,' तो फिर वह ज़हरीले नाग से दूर ही रहेगा। उसी तरह इसमें भी समझ में आ जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ। लेकिन वह समझ में क्यों नहीं आता?

दादाश्री : अनादिकाल से आराधन किया हुआ है न, उसी को सत्य माना है न।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है, लेकिन वह आराधन किया हुआ और आज का ज्ञान, उसमें अभी भी क्यों युद्ध चल रहा है?

दादाश्री : विस्तार से सोचने की खुद की शक्ति ही नहीं है न।

प्रश्नकर्ता : शक्ति नहीं है या उसकी इच्छा नहीं है?

दादाश्री : नहीं, शक्ति नहीं है। इच्छा तो है पूरी-पूरी।

प्रश्नकर्ता : अब मुझे ऐसा लग रहा है कि शक्ति तो है ही।

दादाश्री : और सारी शक्ति होती तो है, लेकिन वह उत्पन्न नहीं हुई है न?!

प्रश्नकर्ता : तो वह शक्ति उत्पन्न कैसे होगी?

दादाश्री : वह तो रात-दिन उसी के विचार हों, उसी पर विचारणा करता रहे और उसमें कितना आराधन करने योग्य है और वह कितना करने योग्य है, तुरंत अंदर जैसे-जैसे विचारणा होगी न, वैसे-वैसे खुलता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यानी इसका मीनिंग यही हुआ न कि कुछ भी करके यह व्यवहार खत्म कर देना चाहिए।

दादाश्री : इसलिए वे श्री विज़न इस्तेमाल करते हैं न? और सोचा हुआ होगा तो श्री विज़न भी इस्तेमाल नहीं करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : दिन भर के जो व्यवहार हैं, वे व्यवहार आवश्यक हैं। वही उसकी प्रगति में अंतरायरूप हैं न अभी, क्योंकि उसे सोचने का टाइम ही नहीं मिलता।

दादाश्री : इसलिए इसके बजाय, सब से अच्छा यह है, कि अपनी दृष्टि कहीं पर भी चिपके, तो उखाड़ देना और प्रतिक्रमण कर लेना, बस।

प्रश्नकर्ता : मन एक सिद्धांत पर कन्टिन्युअस नहीं चलता। बार-बार दृष्टि बिगड़ती है और प्रतिक्रमण करना या यह करना, यह सिद्धांत कन्टिन्युअस नहीं चलता। श्री विज़न भी एट-ए-टाइम नहीं चलता। कन्टिन्युअस रहना चाहिए। जब विस्तार से उसे समाधान होगा तब वह आगे बढ़ता है।

दादाश्री : वह विस्तार से सप्लाइ भी करना पड़ेगा। अपने से हो सके तब तक, पहले तो यह उखाड़ देना चाहिए, तो चल पड़ेगा फटाफट। खुद के खेत में यदि सारी कपास बोई है, कपास को पहचानते हैं कि यह कपास है, तब फिर अगर दूसरा कुछ उगे तो सिर्फ उसे निकाल देना है। उसे निराई कहते हैं। ऐसे निराई कर देंगे तो हो जाएगा। उगते ही सारा दबा दिया तो हो गया। उससे पहले नहीं दबाया जा सकता। जब तक उगेगा नहीं, तब तक बीज का पता नहीं चलेगा, उगते ही पहचान जाओगे कि यह बीज अलग है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसका निश्चय होगा तो दूसरा कुछ उगते ही उसे पता चल जाएगा न?

दादाश्री : दूसरा बीज दिखे तो उसे उखाड़कर फेंक देना यानी संक्षेप में कहें तो यही सब से अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस एक सिद्धांत पर ही तो नहीं बैठे रह सकते हैं न! आगे बढ़ना तो पड़ेगा न!

दादाश्री : उस घड़ी फिर से मिल आएगा रास्ता। उस घड़ी अपने आप सभी संयोग मिल जाएँगे।

व्यवहार-निश्चय चारित्र

इसीलिए मैं इन सभी को ब्रह्मचर्य के बारे में समझाता हूँ। क्योंकि चारित्र की बुनियाद पर मोक्षमार्ग कायम है। आपको तो चारित्र की बुनियाद मज़बूत रखनी है। मोक्ष में जाने के लिए वही एक मूल चीज़ है।

व्यवहार चारित्र यानी किसी स्त्री को दु:ख हो ही नहीं, ऐसे बरतना। किसी स्त्री के लिए दृष्टि नहीं बिगाड़े। कुछ मुद्दत के लिए लिया गया चारित्र तो अच्छा कहलाता है। अभ्यास तो हो जाएगा न! चारित्र लिया तो फिर झंझट ही खत्म हो जाएगा न! फिर वे विचार ऐसा समझेंगे कि इन्हें अपमान महसूस होगा, अत: जान-बूझकर कम आएँगे।

'ज्ञानी पुरुष' के आधार पर चारित्र वह तो सब से बड़ी चीज़ है। जबकि 'ज्ञानी पुरुष' का चारित्र तो बहुत ही उच्च होता है। कभी मन भी नहीं बिगड़ता।

विषय का विचार तक नहीं आना चाहिए और यदि विचार आ जाए तो उसे धो देना। मन में यदि सिर्फ विषय का भाव ही उत्पन्न हो, तो

उसे धो देना चाहिए लेकिन ऐसा शुद्ध हो जाना है ताकि वाणी में न रहे, वर्तन में न रहे, विचार में न रहे। लेकिन कभी यदि मन में ज़रा सा भी विचार आए, तो उसका प्रतिक्रमण कर लेना। इसे 'व्यवहार चारित्र' कहा जाता है। निश्चय चारित्र में तो भगवान ही बन जाएगा। निश्चय चारित्र, वही भगवान। केवलज्ञान के बिना निश्चय चारित्र संपूर्ण नहीं हो सकता, पूर्ण दशा में नहीं हो सकता।

व्यवहार चारित्र यानी *पुद्गल* चारित्र, आँखों से दिखाई दे, ऐसा चारित्र और जब निश्चय चारित्र उत्पन्न होगा तब ऐसा कहा जाएगा कि भगवान बन, अभी तो आप सभी के पास 'दर्शन' है, फिर ज्ञान में आएगा, लेकिन चारित्र उत्पन्न होने में देर लगेगी। फिर भी अक्रम है न, इसलिए चारित्र शुरू होगा ज़रूर, लेकिन आपके लिए समझना मुश्किल है।

प्रश्नकर्ता : उसके लक्षण क्या होते हैं?

दादाश्री : ऐसा है न, वह निश्चय चारित्र बहुत कम होता है। जो आँखों से देखा और जाना जा सके, वह चारित्र नहीं कहलाता, जो बुद्धि से देखा-जाना जा सके वह भी चारित्र नहीं कहलाता। उसमें तो आँखों का उपयोग नहीं होता, मन का उपयोग नहीं होता, बुद्धि का उपयोग नहीं होता। उसके बाद जो भी देखे-जाने, वह निश्चय चारित्र है।

लेकिन इसमें जल्दबाज़ी करने जैसा नहीं है। यह 'दर्शन' तक पहुँचा है, इतना भी बहुत हो गया न! खुद के दोष दिखाई दें और उन सभी के प्रतिक्रमण हों, तो काफी है!

प्रश्नकर्ता : व्यवहार चारित्र के लिए, विशेष रूप से और क्या करना है?

दादाश्री : कुछ नहीं। व्यवहार चारित्र के लिए और क्या करना है? ज्ञानी की आज्ञा में रहना ही व्यवहार चारित्र है और उसमें भी यदि ब्रह्मचर्य सम्मलित हो तो अति उत्तम। तभी वास्तव में चारित्र कहलाएगा। तब तक पूरी तरह से व्यवहार चारित्र नहीं कहा जाएगा। व्यवहार चारित्र की पूर्णाहुति नहीं होती। जब ब्रह्मचर्य व्रत आ जाए, तब 'व्यवहार चारित्र' की पूर्णाहुति होती है।

संपूर्ण जागृति सहित होने चाहिए प्रतिक्रमण

सुबह-सुबह पाँच बार बोलना कि, 'इस जगत् की कोई विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए।' मुझे यानी 'मैं शुद्धात्मा हूँ' उस तरह से और जो चाहिए, वह 'चंदूभाई' को चाहिए और चंदूभाई 'व्यवस्थित' के अधीन है। 'व्यवस्थित' में जो हो, सो भले हो और 'व्यवस्थित' में नहीं हो, वह भी भले हो। यदि इतना रहेगा तो भीतर कोई रुचि हुई या नहीं, आपको उसका पता चलेगा। खास करके अन्य कोई रुचि हो, ऐसा नहीं है, लेकिन इस काल में वातावरण इतना दूषित हो गया है कि स्त्री को पुरुष की ओर देखते समय और पुरुष को स्त्री की ओर देखते समय आँख गड़ाकर नहीं देखना चाहिए। वर्ना अन्य कोई खास दोष खड़ा हो सके, ऐसा नहीं है। या फिर जैसा ऊपर बताया है, सुबह वैसा बोलकर करना, क्योंकि आपमें वैसा वैराग्य नहीं है। आपमें जागृति है, लेकिन संपूर्ण रूप से जितनी जागृति होनी चाहिए, वह नहीं रह पाती क्योंकि अभी तक पृथक्करण नहीं हुआ है।

जागृति तो उसे कहते हैं कि किसी स्त्री को देखो या पुरुष को देखो, चाहे किसी को

भी देखो, तो राग होने से पहले उसका पूरा हिसाब दिखाई दे जाए। इस चमड़ी की वजह से सब सुंदर दिखाई देता है लेकिन इस चमड़ी को निकाल दिया जाए तो कैसा दिखाई देगा? यह गठरी बाँधी हुई हो, और उस पर से कपड़ा निकाल दें तो कैसा दिखाई देगा? जागृत को तो वैसा ही दिखाई देता है सब। संपूर्ण जागृति कब कहलाती है? यह सब उसे, वैसा ही दिखाई दे। लेकिन इस काल की वक्रता ऐसी है कि वह जागृति को टिकने नहीं देती, इसलिए सावधान रहना चाहिए। नहीं तो फिर रोज़ सुबह-सुबह बोलना और उस के प्रति 'सिन्सियर' रहना।

यदि चौथे *आरे* में मैंने यह ज्ञान दिया होता तो मुझे ऐसे सावधान नहीं करना पड़ता। यह पाँचवाँ *आरा* (कालचक्र के बारहवें हिस्से में से एक भाग) बहुत कठिन *आरा* है, बहुत वक्र *आरा* है, बहुत वक्रता वाला है। वक्रता यानी कपट। कपट का संग्रहस्थान ही कह दो न! अत: हम क्या कहते हैं कि स्त्री का मिलना, वह जोखिम नहीं है। लेकिन आँखों का आकर्षित होना, जोखिम है। इसलिए उसका प्रतिक्रमण करके केस खारिज कर देना। शास्त्रकारों ने भी कहा है कि नजरें नीची करके चलना।

दृष्टि न बिगड़े उसे कहते हैं 'ब्रह्मचर्य'

यह तो 'जैसा है वैसा' नहीं दिखाई देने के कारण मूर्च्छा रहती है। जब तक स्त्री को 'जैसा है वैसा' आरपार नहीं देख सकते, तब तक विज़न नहीं खुलता। जब मन विषय में खुला होगा (जब विषय का स्वरूप पूरी तरह से समझ में आ जाएगा) तब विज़न खुलेगा या फिर साल भर ब्रह्मचर्य का पालन करे और विषय का विचार तक भी नहीं आए, तब विज़न खुलेगा।

अन्य कहीं दृष्टि बिगड़े, तब तो वह अधोगति की बहुत बड़ी निशानी कहलाती है।

यदि यहाँ स्त्री-पुरुष का ब्रह्मचर्य पालन किया जाए, तब तो देवलोक जैसा सुख होगा। फिर तो संसार देवलोक जैसा लगेगा। जो दृष्टि नहीं गड़ाए, वह जीत गया। दृष्टि गड़ाई कि खत्म हो गया। दृष्टि तो गड़ानी ही नहीं चाहिए। दृष्टि बिगड़े तब वह गलत कहलाता है। दृष्टि नहीं बिगड़े वह ब्रह्मचर्य कहलाता है। आपकी नीयत खराब हो, तभी सबकुछ बिगड़ता है। इस एक बात में तो 'स्ट्रोंग' रहना ही पड़ेगा न? इस बारे में पहले संतपुरुषों ने ज़हर खाए हैं। क्योंकि ज़हर खाना तो एक जन्म के लिए मारता है और इस विषय से तो अनंत जन्मों का मरण होता है! इसलिए विचार आते ही उखाड़कर फेंक देना (वर्ना उसका बीज डल जाएगा। दो दिन में तो फिर मार ही डालेगा। फिर से उगेगा, इसलिए विचार आते ही उसे उखाड़कर फेंक देना। और किसी भी स्त्री पर दृष्टि नहीं गड़ाना। दृष्टि आकृष्ट हो जाए तो हटा देना और दादा को याद करके माफी माँग लेना। यह विषय आराधन करने जैसा है ही नहीं, ऐसा भाव निरंतर रहे तो फिर खेत साफ हो जाएगा। और अभी भी जो हमारी निश्रा में रहेगा, उसका सबकुछ पूरा हो जाएगा।

जब दृष्टि दोष जाएगा तब जगत् 'जैसा है वैसा' दिखाई देगा। जिनका दृष्टि दोष खत्म हुआ हो, ऐसे 'अनुभवी पुरुष' के साथ बैठने से अपना दृष्टि दोष खत्म हो जाता है। अन्य किसी और से नहीं।

जय सच्चिदानंद

अक्रम मार्ग में ब्रह्मचर्य का स्थान कितना?

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान मिलने के बाद, दादा का ज्ञान मिलने के बाद ब्रह्मचर्य की आवश्यकता रहती है या नहीं?

दादाश्री : ब्रह्मचर्य की आवश्यकता तो जो पालन कर सके, उसके लिए है, और जो पालन नहीं कर सके उसके लिए नहीं है। यदि आवश्यक ही होता तब तो ब्रह्मचर्य-पालन नहीं करनेवालों को सारी रात नींद ही नहीं आती कि अब तो हमारा मोक्ष चला जाएगा। अब्रह्मचर्य गलत है, ऐसा जान ले तो भी बहुत हो गया।

ऐसा है न, इस बात का खुलासा आज कर दिया। ब्रह्मचर्य और अब्रह्मचर्य में से आवश्यक क्या है? उसका रूट कॉज़ क्या है? वह किसी को पता नहीं चल सके, ऐसी चीज़ है। यानी यह रूट कॉज़ मैंने आपको बता दिया। यह जो रूट कॉज़ है, वह मौलिक है।

प्रश्नकर्ता : बौद्धिक विषयों की रमणता तो रहेगी ही न?

दादाश्री : हम स्त्री से संबंधित रमणता का विरोध करते हैं। एक तरफ अब्रह्मचर्य चल रहा हो और दूसरी तरफ ज्ञानीपुरुष को भले ही कितना भी देह समर्पित किया हो, लेकिन यदि स्त्री की देह के प्रति राग है तो इसका मतलब खुद की देह पर भी उतना ही राग है। अत: अर्पणता उतनी कच्ची ही रहेगी। मदर, फादर, भाई, बहन पर के प्रति जो राग है उसे हम राग नहीं कहते क्योंकि उस राग में उतना तन्मयाकार नहीं होता। जबकि स्त्री विषय में तो इतना अधिक तन्मयाकार हो जाता है, यानी अंदर इतना अधिक खो जाता है कि उसे हिलाने पर भी पता नहीं चलता।

बाकी वास्तविक ब्रह्मचर्य अर्थात् आत्मचर्या में ही अपना उपयोग और *पुद्गल* अर्थात् विषयचर्या में उपयोग नहीं। यानी सिर्फ आत्मरमणता, *पुद्गल* रमणता नहीं। अन्य *पुद्गल* रमणता उतनी बाधक नहीं है लेकिन विषय से संबंधित *पुद्गल* रमणता तो ठेठ आत्मा का अनुभव भी नहीं करने देती।

प्रश्नकर्ता : फिलॉसफर ऐसा कहते हैं कि सेक्स को दबाने से विकृत हो जाते हैं। स्वास्थ्य के लिए सेक्स ज़रूरी है।

दादाश्री : उनकी बात सही है, लेकिन अज्ञानी को सेक्स की ज़रूरत है वर्ना शरीर को आघात लगेगा। जो ब्रह्मचर्य की बात को समझते हैं उन्हें सेक्स की ज़रूरत नहीं है, और अज्ञानी व्यक्ति को यदि ब्रह्मचर्य के लिए बाध्य किया जाए तो उसका शरीर टूट जाएगा, खत्म हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जिसे समकित प्राप्त नहीं हुआ है, यदि वह ब्रह्मचर्य का महत्व समझे तो उसे भी परेशानी नहीं आएगी न?

दादाश्री : ब्रह्मचर्य का महत्व वह ज्ञानी के सिवा या शास्त्र के आधार के सिवा समझ ही नहीं सकता।

प्रश्नकर्ता : तो ये सभी साधु जो ब्रह्मचर्य पालन करते हैं, वह?

दादाश्री : वहाँ उन्हें शास्त्र का आधार है। कोई भी आधार होना चाहिए। इसलिए ये बाहरवाले लोग यदि ऐसा करने जाएँ..., दबाने से तो विकृत हो जाएगा। ब्रह्मचर्य हितकारी है-वह कैसे, किस दृष्टि से, वह पूर्णरूप से समझ लेना पड़ेगा।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

21-28 दिसम्बर : अडालज त्रिमंदिर संकुल, दादा नगर में आठ दिनों तक पारायण का आयोजन हुआ। जिसमें लगभग 10,000 महात्माओं ने भाग लिया। विदेश से भी लगभग 200 NRI और विदेशी महात्मा आए हुए थे। आप्तवाणी-श्रेणी 14 भाग-1 पर पृष्ठ संख्या-161 से वांचन के साथ पारायण आगे बढ़ा। द्रव्य-गुण व पर्याय के गहन विषय पर वांचन और पूज्यश्री द्वारा सत्संग हुआ था। पारायण के दौरान क्रिसमस पर ब्रेक में विदेशी महात्मओं ने भक्तिगीत गाए थे। उस रात महात्माओं ने गरबा भी किया। पूज्यश्री के हाथों मणीपुरी भाषा में अनुवादित 'आत्मसाक्षात्कार' पुस्तक का विमोचन हुआ। अंतिम दिन आप्तवाणी श्रेणी-14 भाग-2 का वांचन भी शुरू हुआ। आठ दिनों में महात्माओं ने पूज्यश्री द्वारा प्रश्नोत्तरी सत्संग के दौरान अपने प्रश्नों के समाधान प्राप्त किए थे। 'अरिहंत' चेनल पर समग्र पारायण का जीवंत प्रसारण किया गया।

29 दिसम्बर : अडालज में दादा नगर होल में महात्माओं द्वारा घर व ऑफिस के लिए ली गई श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा पूज्यश्री के कर कमलों से हुई। सभी मूर्तियों के दर्शन के बाद पूज यश्री ने एक घंटे तक प्राणप्रतिष्ठा विधि की। उस समय महात्माओं ने सामूहिक रूप से विधि व असीम जय जयकार किए। प्रतिष्ठा के बाद पूज्यश्री के साथ-साथ महात्माओं ने भी अपनी-अपनी मूर्तियों का प्रक्षाल, पूजन व आरती किए। अंत में मूर्तियों को सिर पर रखकर, महात्मा गरबा की ताल पर झूम उठे। प्रतिष्ठा के समय समग्र वातावरण आनंद व उल्लासमय हो उठा था।

31 दिसम्बर : 2020 के नए वर्ष की पूर्व संध्या पर अडालज त्रिमंदिर के जायजेन्टिक होल में विशेष भक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उसमें विदेशी महात्माओं ने भी भकितगीत गाए थे। नए साल के अवसर पर विशेष संदेश में पूज्यश्री ने निरंतर शुद्धात्मा के उपयोग में रहने की बात पर भार दिया।

2 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर में परम पूज्य दादाश्री की 32वीं पुण्यतिथि के अवसर पर समूहिक विधि, प्रार्थनाएँ व आरती की गई। पूज्यश्री ने त्रिमंदिर में पधारकर सभी भगवंतों के दर्शन करके प्रासंगिक आशीर्वचन दिए। शाम को दादानगर हॉल में जगत्कल्याणार्थे एक घंटे की स्वरूप कीर्तन भक्ति के बाद, पूज्यश्री ने 'ज्ञानी पुरुष' भाग-3 ग्रंथ का विमोचन किया और पुस्तक में दिए गए दादाश्री के व्यवसाय से संबंधित घटनाओं व बातों पर विशेष सत्संग किया। महात्माओं ने ज्ञानी पुरुष पर प्रश्न पूछे थे। रात को दादाई भक्ति के बाद, दादाश्री पर बनाई गई स्पेश्यल सी.डी. दिखाई गई।

4-5 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में आयोजित सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम में 1335 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। कर्णाटक में 'चंदना' चैनल पर कार्यक्रम सुनकर सिर्फ कन्नड़ भाषा ही समझने वाले मुमुक्षु, आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए अडालज आए थे ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्होंने धन्यता का अनुभव किया। इसके अलावा भारत के कईं राज्यों और गुजरात के विविध जिलों में से आए मुमुक्षुओं ने भी अपने प्रश्नों के उत्तर पाए।

14-15 जनवरी : तीन साल के बाद कोलकता में पूज्यश्री के सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कोलकता के महात्माओं ने बंगाली स्टाइल में पगड़ी व हार पहनाकर पूज्यश्री का स्वागत किया। पहले दिन बाहर से आए मुमुक्षुओं ने ज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछे। ज्ञानविधि में लगभग 340 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। असाम, बिहार, उड़ीसा, झारखंड वगैरह राज्यों में से लगभग 300 महात्मा व मुमुक्षु पधारे थे। सेवार्थियों के लिए विषेश सत्संग व दर्शन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कोलकता से पूज्यश्री यात्रा में जुड़ने के लिए विमान मार्ग से 'गया' शहर पहुँच गए थे।

Pujya Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule (2020)

UK: + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org, Germany: +49 700 32327474

Date	From	to	Event	Venue
01-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	Aptaputra Satasang	Shree Birmingham Pragati Mandal 10 Sampson Road, Sparbrook Birmingham, B11 1JL
02-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
03-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	**Maher Centre,** 15 Ravensbridge Drive, Leicester, LE4 0BZ
04-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
05-Apr-20	10:30 AM	12:00 PM	Aptaputra Satasang	
05-Apr-20	03:30 PM	07:00 PM	GNAN VIDHI	
14-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	Aptaputra Satasang	**Fortpitt Gramar School** Rochester, Chatham Kent , ME4 6TJ
15-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
17-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	**Harrow Leisure Centre (Byron Hall),** Christchurch Avenue, Middlesex, **Harrow,** HA3 5BD
18-Apr-20	10:30 AM	12:00 PM	Aptaputra Satasang	
18-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
19-Apr-20	10:30 AM	12:00 PM	Aptaputra Satasang	
19-Apr-20	04:00 PM	07:30 PM	GNAN VIDHI	
20-Apr-20	07:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
24-27 Apr-20	All day		Akram Vignan Event	**Willingen, Germany**

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उज्जैन **दिनांक : 5 मार्च** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9425195647

स्थल : गुजराती समाज धर्मशाला, नई सड़क, उज्जैन.

कुशीनगर **दिनांक : 8 अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 6388218155

स्थल : स्वामी नाथ शर्मा, गरुण नगर, डॉ. ए. के. सिंह पडरौना के हॉस्पिटल के पास, कुशीनगर.

जबलपुर	**दि : 10-11 मार्च**	**संपर्क :** 9425160428	**तेजपुर**	**दि : 7 अप्रैल**	**संपर्क :** 9101753686
इलाहाबाद	**दि : 2 अप्रैल**	**संपर्क :** 9935378914	**गोरखपुर**	**दि : 7 अप्रैल**	**संपर्क :** 9935949099
मिर्जापुर	**दि : 3 अप्रैल**	**संपर्क :** 9415288161	**गोरखपुर**	**दि : 13 अप्रैल**	**संपर्क :** 9935949099
तिनसुकिया	**दि : 4 अप्रैल**	**संपर्क :** 9577697159	**बिलासपुर**	**दि : 8 अप्रैल**	**संपर्क :** 9425530470
गाज़ियाबाद	**दि : 4 अप्रैल**	**संपर्क :** 9911142455	**बारामा**	**दि : 8 अप्रैल**	**संपर्क :** 7002949660
चंपारण	**दि : 4-5 अप्रैल**	**संपर्क :** 9329523737	**महाराजगंज**	**दि : 9 अप्रैल**	**संपर्क :** 9793353018
दिल्ली	**दि : 5 अप्रैल**	**संपर्क :** 9810098564	**बुटवल**	**दि : 10-12 अप्रैल**	**संपर्क :** +977-9847042399
वाराणसी	**दि : 4-6 अप्रैल**	**संपर्क :** 9795228541	**कोलकाता**	**दि : 11-12 अप्रैल**	**संपर्क :** 9831079123
गुवाहाटी	**दि : 5 अप्रैल**	**संपर्क :** 9954821135	**कटिहार**	**दि : 10-11 अप्रैल**	**संपर्क :** 9931825351
दुर्ग	**दि : 6 अप्रैल**	**संपर्क :** 9479055563	**पटना**	**दि : 12-13 अप्रैल**	**संपर्क :** 9431015601

समय व स्थल के हेतु उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 9 से 9-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ सुबह 7 से 8 तथा शनि से बुध रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम से शुक्र सुबह 7 से 7-30 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हररोज़ पर सुबह 7 से 7-30, दोपहर 2 से 2-30 रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

भावनगर

29 फरवरी (शनि) शाम 7 से 10 - **सत्संग** और **1 मार्च** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

2 मार्च (सोम) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : जवाहर मैदान, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मोल के सामने, भावनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9924344425

अमरेली

3 मार्च (मंगल) शाम 7 से 10 - **सत्संग** और **4 मार्च** (बुध) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

5 मार्च (गुरु) शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : न्यु खेडूत तालिम केन्द्र (फार्म वाडी), लिलिया रोड, त्रिमंदिर के पास, अमरेली (गुजरात). **संपर्क :** 9924344460

धोराजी

6 व 8 मार्च (शुक्र व रवि) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग** और **7 मार्च** (शनि) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : लेउवा पटेल रोड समाज, जमनावड रोड, धोराजी, जि. राजकोट (गुजरात). **संपर्क :** 7777979894

वेरावल

8 व 10 मार्च (रवि व मंगल) शाम 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग** और **9 मार्च** (सोम) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

स्थल : सांईबाबा मंदिर के सामने, वेरावल - जूनागढ़ हाईवे, वेरावल, जि. गीर-सोमनाथ (गुजरात). **संपर्क :** 9924344459

पोरबंदर

10 व 12 मार्च (मंगल व गुरु) शाम 6-30 से 9-30 - **आप्तपुत्र सत्संग** और **11 मार्च** (बुध) शाम 6 से 9-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : चोपाटी पार्टी प्लोट, हाथी ग्राउन्ड के सामने, चोपाटी, पोरबंदर (गुजरात). **संपर्क :** 9574001243

अडालज त्रिमंदिर

19 मार्च (गुरु) - **पूज्य नीरुमाँ की 14वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

20-21 मार्च (शुक्र-शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **22 मार्च** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

6 से 10 मई - सत्संग शिविर

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। शिविर संबंधित अधिक जानकारी आने वाले अंक में दी जाएगी। **यह जानकारी आपको रेल्वे टिकट बुक करने हेतु एडवान्स में दी जा रही है।**

नेशनल हिन्दी शिविर - 2020

20 से 24 मई - सत्संग शिविर तथा 23 मई - ज्ञानविधि

सूचना : 1) यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर संबंधित अधिक जानकारी मार्च 2020 के अंक में दी जाएगी। **यह जानकारी आपको रेल्वे टिकट बुक करने हेतु एडवान्स में दी जा रही है।** 2) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. (079) 39830400, 9924348880 (सुबह 9-30 से 12 तथा दोपहर 3 से 7) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9328661188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

फरवरी 2020
वर्ष-15 अंक-4
अखंड क्रमांक - 172

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

जितने दृष्टि दोष होते हैं, उनके प्रतिक्रमण करते रहने पर छूटा जा सकेगा

इस दूषमकाल में दृष्टि संभालना। दृष्टि तो कभी भी नहीं डालनी चाहिए। अंदर वाले बहुत शोर मचाएँ फिर भी। दृष्टि तो बिल्कुल शुद्ध रहनी चाहिए। उसके बावजूद भी अगर नज़र पड़ जाए तो प्रतिक्रमण कर लेना। खाने-पीने में गड़बड़ हो जाए तो चलेगा, लेकिन किसी की तरफ खराब दृष्टि डाल ही कैसे सकते हैं? संसार में यही सब से बड़ा रोग है, आँखें गड़ाना ही गुनाह है और यह समझने के बाद जोखिमदारी बहुत बढ़ जाती है, इसलिए किसी पर दृष्टि ही मत डालना। दृष्टि डालने से ही सब बिगड़ता है। यह जो दृष्टि बिगड़ती है, वह भी एकदम से नहीं बिगड़ती। यदि पहले का हिसाब हो तभी आकर्षण होता है। वहाँ पर हमें प्रतिक्रमण करके छूट जाना चाहिए। इसके बावजूद भी अगर वापस दृष्टि पड़ जाए तो फिर से प्रतिक्रमण करना चाहिए। इस तरह सौ-सौ बार प्रतिक्रमण करोगे तब छूटा जा सकेगा।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.